VI Class Hindi First Language

FREE

बाल-वसंत - 1

कक्षा छठवीं

प्रथम भाषा हिंदी

VI Class Hindi First Language

Government of Telangana
Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation
When abused in or out of school.
To save the children from dangers and problems.
CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY
24 HOUR NATIONAL HELPLINE
When the children are denied school and compelled to work.
When the family members or relatives misbehave.
1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ के अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आप सबसे पहले संज्ञा शब्दों, तत्पश्चात क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों की पहचान करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आपमें पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।
* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।
* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।
* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।
* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहें।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सकें।

SCERT TELANGANA

VI Class Hindi First Language

बाल-वसंत - 1

कक्षा छठवीं

प्रथम भाषा हिंदी

VI Class Hindi First Language

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

बाल-वसंत - 1

प्रथम भाषा हिंदी कक्षा छठवीं की पाठ्यपुस्तक

Class-VI Hindi (First Language)

संपादक मंडल

प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय,हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
प्रोफेसर, उस्मानिया विश्वविद्यालय

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री सुवर्ण विनायक
शैक्षिक सलाहकार, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा

पाठ्य पुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
प्रोफेसर, सी एंड टी, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा

श्री बी सुधाकर
निदेशक, सरकारी पुस्तक प्रकाशनालय, तेलंगाणा

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से आगे बढ़ो।
विनय से रहो।

क़ानून का आदर करो।
अधिकार प्राप्त करो।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2012

New Impressions : 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana.

— o —

SCERT TELANGANA

सहभागी गण

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग,
एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
एस.ए. हिंदी, जी.एच. एस. रामन्नापेट,नलगोंडा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम. एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती एन. हेमलता
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

विषय सलाहकार

श्री कुमार अनुपम
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री पुष्पराज राणावत
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री अनुशब्द
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

श्री अलवाला किशोर
नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

आमुख

हमें ज्ञात है कि बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक़ का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्‌देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

आभार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,**तेलंगाणा**, हैदराबाद, ने छठवीं कक्षा प्रथम भाषा हिंदी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की छठवीं कक्षा हिंदी की वसंत–1 शीर्षकीय पुस्तक के पाठों को लेकर, एपीएससीएफ–2011 में बताये गये मानदंडों के आधार पर अभ्यास जोड़े गये। वसंत–1 के अभ्यासों के अतिरिक्त सुनिए–बोलिए, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, शब्द–भंडार, प्रशंसा, **भाषा की बात और परियोजना कार्य** जोड़े गये हैं। हर पाठ का आरंभ एक प्रस्तावना चित्र, प्रश्न, सूचनाओं के साथ हुआ है। इस तरह बनायी गयी पाठ्यपुस्तक का नाम बाल – वसंत – 1 रखा गया है। वसंत–1 के पाठों व अभ्यासों को स्वीकारने की अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के हम आभारी हैं। पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसायटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व आभार व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन संस्थाओं तथा अकादमिक सहयोग के लिए शारदा कुमारी और नीलकंठ के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

SCERT TELANGANA

अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

यह किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को बच्चे के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्य सामग्री का चयन और अभ्यासों में बच्चे के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। हर पाठ के अभ्यास में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों से संबंधित अभ्यासों के साथ-साथ शब्द-भंडार, भाषा की बात, सृजनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधित अभ्यास भी दिये गये हैं। इन सभी का सदुपयोग कर, छात्रों में भाषागत कौशलों व विविध दक्षताओं का समुचित विकास करने का प्रयास करें। बालगीत या वार्तालाप या कहानी आदि पाठों के लिए सुनने-बोलने संबंधी क्रियाएँ कक्षा में सामूहिक रूप से करवायें। सबको स्वतंत्र व सहज रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें। कई अभ्यास-प्रश्न भाषा शिक्षण की परिचित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि में बच्चे की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। उदाहरण के लिए शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'चाँद से थोड़ी सी गप्पें' में दिया गया एक प्रश्न चंद्रमा की कलाओं के बारे में है और सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' में इतिहास और भूगोल के भी कुछ प्रश्न दिए गए हैं। ऐसे प्रश्नों के ज़रिए बच्चों को हिंदी की विपुल शब्द-संपदा के विविध हिस्सों का स्पर्श मिलेगा। वे आज के शहरी जीवन में अपेक्षाकृत कम सुनाई पड़ने वाले शब्दों और प्रयोगों को अपना सकेंगे।

नयी कविता बच्चों के लिए अनुपयुक्त मानी जाती रही है। शिक्षकों में भी उसे भावार्थ, सीख आदि के पारंपरिक शैक्षणिक पैमानों पर कुछ अटपटा मानने की प्रवृत्ति रही है। इससे साहित्य की समग्रता के प्रति बच्चों की रुचि को बढ़ाने में हम सफल नहीं हो सकते। नयी कविता के पाठ और प्रश्न-अभ्यासों के माध्यम से बच्चों के ज्ञान और ग्रहण कौशल का विकास किया जा सकता है। अंततः कोई भी भाषा-पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी जब वह बच्चों को साहित्य की धरोहर और आज लिखे जा रहे साहित्य के प्रति उत्सुक बनाए।

हिंदी के प्रचलित विभिन्न रूप और उसकी बोलियाँ भी इसकी धरोहर का अंग हैं और उस लोक का निर्माण करती हैं जिसमें हिंदी फलती-फूलती रही है। विभिन्न पाठों में यत्र-तत्र प्रयोग में आए हिंदी के प्रचलित रूपों और बोलियों का ज्ञान संसाधन के रूप में शिक्षक इस्तेमाल करें और बच्चों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें तो हिंदी की इस विस्तृत लोक-निधि के प्रति आदर और उत्साह का संस्कार विकसित होगा। उदाहरण के लिए प्रारंभिक हिंदी की झलक देने वाली अवधी में लिखी गई तुलसीदास की कविता 'वन के मार्ग में' और आज की हिंदी की झलक देने वाली कृष्णा सोबती की रचना 'बचपन' तथा विष्णु

SCERT TELANGANA

प्रभाकर की एकांकी 'ऐसे-ऐसे' के भाषा प्रयोगों के नमूनों से बच्चों को हिंदी की समृद्ध परंपरा के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है।

बहुभाषिकता की झलक पाठों में एक स्रोत के रूप में दिखाई देगी। भारतीय भाषाओं से लिए गए कुछ अनूदित पाठ जैसे 'पार नज़र के', 'टिकट अलबम' आदि विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं की रचनाओं से परिचित कराएँगे। पाठ्यपुस्तक में ही **व्याकरण** की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं, इसलिए अलग से व्याकरण की कोई पुस्तक नहीं दी जा रही है। आशा है ऐसे अभ्यासों के द्वारा विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित होगी और बिना रटे ही उनमें भाषायी कौशलों का विकास होगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा में हाथों से की जाने वाली गतिविधियों, उसकी कला संबंधी दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन-जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त कुछ रोचक सामग्रियाँ दी गई हैं। इसी तरह पाठों के साथ विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली सामग्रियाँ भी रखी गई हैं। इन पाठ्य सामग्रियों का अंतर्संबंध अन्य शैक्षिक विषयों से बनता है और इनसे विद्यार्थी के संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। पुस्तक में 'उपवाचक' पाठ भी दिये गये हैं । इसका उद्देश्य बच्चों में द्रुत वाचन और अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है । इन उपवाचक पाठों में से भी सारांशात्मक परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं ।

इस पाठ्यपुस्तक में बच्चों की **स्वाभाविक अभिव्यक्ति**, **कल्पनाशीलता**, **कौशल** और **सोच** को आसपास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु उसके खुद कुछ करने, लिखने-पढ़ने एवं देखने-सुनने के साथ अन्य गतिविधियों के संवर्धन हेतु कुछ नए तरह के प्रश्न-अभ्यासों का निर्माण किया गया है, जिसे शिक्षक और बच्चों के सम्मिलित प्रयासों से ही सही रूप में पूरा किया जाना संभव है। इसलिए शिक्षकों से आशा है कि वे इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करें। हस्त-शिल्प कला और अन्य स्थानीय कलाओं के लिए सुविधानुसार शिक्षक कुछ अभ्यास-कार्य व आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं भी करा सकते हैं।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

क्या कहाँ है?

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	साथी हाथ बढ़ाना	गीत	जून	1
	2.	बचपन	संस्मरण	जुलाई	6
	3.	जो देखकर भी नहीं देखते	निबंध	जुलाई	13
	4.	अक्षरों का महत्व	निबंध	अगस्त	19
	*	मैं सबसे छोटी होऊँ	उपवाचक	अगस्त	25
II.	5.	चाँद से थोड़ी-सी गप्पें	कविता	अगस्त	26
	6.	संसार पुस्तक है	पत्र	सितंबर	31
	7.	पार नज़र के	कहानी	सितंबर	37
	*	झाँसी की रानी	उपवाचक	अक्तूबर	44
III.	8.	वन के मार्ग में	कविता	अक्तूबर	52
	*	बाल रामायण	उपवाचक	सितंबर	56
	9.	नादान दोस्त	कहानी	नवंबर	62
	10.	लोकगीत	निबंध	नवंबर	70
	11.	टिकट अलबम	कहानी	दिसंबर	76
IV.	12.	वह चिड़िया जो	कविता	दिसंबर	85
	13.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	दिसंबर	89
	14.	नौकर	कहानी	जनवरी	98
	*	साँस-साँस में बाँस	उपवाचक	फरवरी	107

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

जहाँ-जहाँ पर यह चिह्न आये, वहाँ-वहाँ यह कीजिए

सुनिए-बोलिए

पढ़िए

परियोजना कार्य

लिखिए

शब्द-भंडार

क्या मैं ये कर सकता हूँ

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

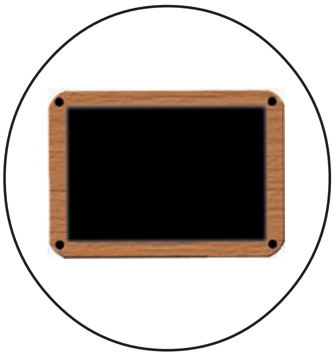

भाषा की बात

SCERT TELANGANA

इकाई - I

1. साथी हाथ बढ़ाना

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. हमें दूसरों की सहायता क्यों करनी चाहिए?
3. तुम किनकी सहायता करना चाहोगे?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।
हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।
मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना।

एक से एक मिले तो
कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो
ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो
राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो
इंसाँ, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना।

❑ *साहिर लुधियानवी*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. 'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने शीश झुकाया।' इस तरह का काम कब संभव हो सकता है?
2. कवि ने बताया है कि मिलजुलकर काम करने से कठिन काम भी सरल हो जाता है और हमें सफलता भी मिलती है। आप इस बात पर अपने विचार दीजिए।
3. गीत में सीने और बाँहों को फौलादी क्यों कहा गया है?

पढ़िए

1. नीचे दिये वाक्यों में गीत के जिस अवतरण का भाव आया है, उसे लिखिए।

हमें मेहनत करने से नहीं डरना चाहिए। जब हमारा देश गुलाम था तब भी हम मेहनत करते थे। लेकिन हमारी मेहनत का फल दूसरे ले जाते थे। अब हमारा देश आज़ाद है। इसलिए हमें मेहनत करके अपने देश को आगे बढ़ाना है। अब हम सबका सुख–दुख एक है। हम सबकी मंज़िल एक ही है। वह है– सच्चाई और सबकी भलाई।

लिखिए

1. कुछ लोग परिश्रम में विश्वास करते हैं और कुछ किस्मत में..। आपका क्या विचार है?
2. 'साथी हाथ बढ़ाना' गीत से क्या सीख मिलती है?
3. एकता से कठिन काम भी सरल क्यों हो जाता है? उदाहरण देते हुए लिखिए।
4. अपने आसपास आप किसे 'साथी' मानते हैं और क्यों?
5. 'अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक'

   कक्षा, मोहल्ले और गाँव / शहर के किस–किस तरह के साथियों के बीच आपको इस वाक्य की सच्चाई महसूस होती है और कैसे?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. ● अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
   ● एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं।

   (क) ऊपर लिखी कहावतों का अर्थ गीत की किन पंक्तियों से मिलता-जुलता है?

   (ख) इन दोनों कहावतों का अर्थ कहावत-कोश में देखकर समझिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. नीचे हाथ से संबंधित कुछ मुहावरे दिए हैं। इनके अर्थ समझिए और प्रत्येक मुहावरे से वाक्य बनाइए ।

   (क) हाथ को हाथ न सूझना

   (ख) हाथ साफ़ करना

   (ग) हाथ-पैर फूलना

   (घ) हाथों-हाथ लेना

   (ङ) हाथ लगना

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ एक छोटी-सी कहानी लिखिए, जिसमें एक-दूसरे को सहयोग करने की घटना हो।

प्रशंसा

■ मानवता, भाईचारा एवं सहयोग की भावना बढ़ाने के लिए हमें क्या करना चाहिए। अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. हाथ और हस्त एक ही शब्द के दो रूप हैं। नीचे दिए शब्दों में हस्त और हाथ छिपे हैं। शब्दों को पढ़कर बताइए कि हाथों का इनमें क्या काम है–

हाथघड़ी	हथौड़ा	हस्तशिल्प	हस्तक्षेप
निहत्था	हथकंडा	हस्ताक्षर	हथकरघा

SCERT TELANGANA

2. इस गीत में परबत, सीस, रस्ता, इंसाँ जैसे शब्दों के प्रयोग हुए हैं। इन शब्दों के प्रचलित रूप लिखो।

3. 'कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना'–

इस वाक्य को गीतकार इस प्रकार कहना चाहता है–

(तुमने) कल गैरों की खातिर (मेहनत) की, आज (तुम) अपनी खातिर करना।

इस वाक्य में 'तुम' कर्ता है जो गीत की पंक्ति में छंद बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द 'अपनी' का प्रयोग कर्ता 'तुम' के लिए हो रहा है, इसलिए यह सर्वनाम है। ऐसे सर्वनाम जो अपने आप के बारे में बताएँ निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। (निज का अर्थ 'अपना' होता है।) निजवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होते हैं जो नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित हैं–

- मैं अपने आप (या आप) घर चली जाऊँगी।
- बब्बन अपना काम खुद करता है।
- सुधा ने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा।

अब तुम भी निजवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित रूपों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अपने को	अपने से	अपना
अपने पर	अपने लिए	आपस में

परियोजना कार्य

- बातचीत करते समय हमारी बातें हाथ की हरकत से प्रभावशाली होकर दूसरे तक पहुँचती हैं। हाथ की हरकत से या हाथ के इशारे से भी कुछ कहा जा सकता है। नीचे लिखे हाथ के इशारे किन अवसरों पर प्रयोग होते हैं? लिखिए–

'क्यों' पूछते हाथ	मना करते हाथ	समझाते हाथ
बुलाते हाथ	आरोप लगाते हाथ	चेतावनी देते हाथ
	जोश दिखाते हाथ	

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. गीत गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गीतों की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. गीत के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. गीत के शब्दों से नयी कविता लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - I

2. बचपन

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. बच्चे कहानी सुनना क्यों पसंद करते हैं?
3. नानी या दादी को इतनी अधिक कहानियाँ कैसे याद रहती होंगी?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी।

मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी–बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं।

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफ़ेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।

हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक। गोल कॉलर और बाजू पर भी गोल कफ़।

एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्रॉक। नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल।

उन दिनों फ्रॉक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग-बिरंगे रिबन का चलन था।

लेमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फ़र टँकी थी।

दो ट्यूनिक भी याद हैं। एक चॉकलेट रंग का और अंदर की कोटी प्याज़ी। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफ़ेद कोटी।

मुझे अपने मोज़े और स्टॉकिंग भी याद हैं!

बचपन में हमें अपने मोज़े खुद धोने पड़ते थे। वह नौकर या नौकरानी को नहीं दिए जा सकते थे। इसकी सख्त मनाही थी।

हम बच्चे इतवार की सुबह इसी में लगाते। धो लेने के बाद अपने-अपने जूते पॉलिश करके चमकाते। जब जूते कपड़े या ब्रश से रगड़ते तो पॉलिश की चमक उभरने लगती।

सरवर, मुझे आज भी बूट पॉलिश करना अच्छा लगता है। हालाँकि अब नयी-नयी किस्म के शू आ चुके हैं। कहना होगा कि ये पहले से कहीं ज़्यादा आरामदेह हैं। हमें जब नए जूते मिलते, उसके साथ ही छालों का इलाज शुरू हो जाता।

जब कभी लंबी सैर पर निकलते, अपने पास रुई ज़रूर रखते। जूता लगा तो रुई मोज़े के अंदर। हाँ, हमारे-तुम्हारे बचपन में तो बहुत फ़र्क हो चुका है।

हर शनीचर को हमें ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल पीना पड़ता। यह एक मुश्किल काम था। शनीचर को सुबह से ही नाक में इसकी गंध आने लगती!

SCERT TELANGANA

छोटे शीशे के गिलास, जिन पर ठीक खुराक के लिए निशान पड़े रहते, उन्हें देखते ही मितली होने लगती।

मुझे आज भी लगता है कि अगर हम न भी पीते वह शनिवारी दवा तो कुछ ज़्यादा बिगड़ने वाला नहीं था। सेहत ठीक ही रहती।

तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है। यहाँ तक कि बचपन की दिलचस्पियाँ भी बदल गई हैं।

याद रहे, उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे, रेडियो और टेलीविजन नहीं थे।

हमारे बचपन की कुलफ़ी आइसक्रीम हो गई है। कचौड़ी-समोसा, पैटीज़ में बदल गया है। शहतूत और फ़ाल्से और खसखस के शरबत कोक-पेप्सी में।

उन दिनों कोक नहीं, लेमनेड, विमटो मिलती थी।

शिमला और नयी दिल्ली में बड़े हुए बच्चों को वेंगर्स और डेविको रेस्तराँ की चॉकलेट और पेस्ट्री मज़ा देनेवाली होती। हम भाई-बहनों की ड्यूटी लगती शिमला माल से ब्राउन ब्रेड लाने की।

हमारा घर माल से ज़्यादा दूर नहीं था। एक छोटी-सी चढ़ाई और गिरजा मैदान पहुँच जाते। वहाँ से एक उतराई उतरते और माल पर। कन्फ़ेक्शनरी काउंटर पर तरह-तरह की पेस्ट्री और चॉकलेट की खुशबू मनभावनी!

हमें हफ़्ते में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी। सबसे ज़्यादा मेरे पास ही चॉकलेट-टॉफ़ी का स्टॉक रहता। मैं चॉकलेट लेकर खड़े-खड़े कभी न खाती। घर लौटकर साइडबोर्ड पर रख देती और रात के खाने के बाद बिस्तर में लेटकर मज़ा ले-ले खाती।

शिमला के काफ़ल भी बहुत याद आते हैं। खट्टे-मीठे। कुछ एकदम लाल, कुछ गुलाबी। रसभरी। कसमल। सोचकर ही मुँह में पानी भर आए। चेस्टनट एक और गज़ब की चीज़। आग पर भूने जाते और फिर छिलके उतारकर मुँह में।

चने ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण! हाँ, चने ज़ोर गरम की पुड़िया जो तब थी, वह अब भी नज़र आती है। पुराने कागज़ों से बनाई हुई इस पुड़िया में निरा हाथ का कमाल है। नीचे से तिरछी

SCERT TELANGANA

लपेटते हुए ऊपर से इतनी चौड़ी कि चने आसानी से हथेली पर पहुँच जाएँ। एक वक्त था जब फ़िल्म का गाना—चना ज़ोर गरम बाबू मैं लाया मज़ेदार, चना ज़ोर गरम—उन दिनों स्कूल के हर बच्चे को आता था।

कुछ बच्चे पुड़िया पर तेज़ मसाला बुरकवाते। पूरा गिरजा मैदान घूमने तक यह पुड़िया चलती। एक-एक चना-पापड़ी मुँह में डालने और कदम उठाने में एक खास ही लय-रफ़्तार थी।

छुटपन में हमने शिमला रिज पर बहुत मज़े किए हैं। घोड़ों की सवारी की है। शिमला के हर बच्चे को कभी-न-कभी यह मौका मिल ही जाता था।

हम जाने क्यों घोड़ों को कुछ कमतर करके समझते। उन पर हँसते थे। ननिहाल के घोड़े खूब हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत। उनकी बात फिर कभी।

शाम को रंग-बिरंगे गुब्बारे। सामने जाखू का पहाड़। ऊँचा चर्च। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर-दूर तक उनकी गूँज फैल जाती। लगता, इसके संगीत से प्रभु ईशू स्वयं कुछ कह रहे हैं।

सामने आकाश पर सूर्यास्त हो रहा है। गुलाबी सुनहरी धारियाँ नीले आसमान पर फैल रही हैं। दूर-दूर फैले पहाड़ों के मुखड़े गहराने लगे और देखते-देखते बत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। रिज पर की रौनक और माल की दुकानों की चमक के भी क्या कहने! स्कैंडल पॉइंट की भीड़ से उभरता कोलाहल।

सरवर, स्कैंडल पॉइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल बना हुआ था। इसकी पटरियाँ—उस पर खड़ी छोटे-छोटे डिब्बों वाली ट्रेन। एक ओर लाल टीन की छतवाला स्टेशन और सामने सिग्नल देता खंबा—थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनीं सुरंगें!

पिछली सदी में तेज़ रफ़्तारवाली गाड़ी वही थी। कभी-कभी हवाई जहाज़ भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर दौड़ते। दीखता एक भारी-भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है पंख फैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तेज़ लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर अंग्रेज़ थे।

शुरू-शुरू में चश्मा लगाना बड़ा अटपटा लगा। छोटे-बड़े मेरे चेहरे की ओर देखते और कहते—आँखों में कुछ तकलीफ़ है! इस उम्र में ऐनक! दूध पिया करो। मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती—कुछ देर पहनोगी तो ऐनक उतर जाएगी।

वैसे डॉक्टर साहिब ने पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन चश्मा तो अब तक नहीं उतरा। नंबर बस कम ही होता रहा! मैं अपने-आप इसकी ज़िम्मेवार हूँ। जब आप दिन की रोशनी को छोड़कर रात में टेबल लैंप के सामने काम करेंगी—तो इसके अलावा और क्या होगा! हाँ, जब पहली बार मैंने चश्मा लगाया तो मेरे एक चचेरे भाई ने मुझे छेड़ा—देखो, देखो, कैसी लग रही है!

आँख पर चश्मा लगाया
ताकि सूझे दूर की
यह नहीं लड़की को मालूम

SCERT TELANGANA

सूरत बनी लंगूर की!

मैं खीझी कि मुझ पर यह क्यों दोहराया जा रहा है! पर शेर बुरा न लगा।

जब वह चाय पीकर चले गए तो मैं अपने कमरे में जाकर आईने के सामने खड़ी हो गई। कई बार अपने को देखा। ऐनक उतारी। फिर पहनी। फिर उतारी। देखती रही–देखती रही।

सूरत बनी लंगूर की–

नहीं-नहीं-नहीं–

हाँ-हाँ-हाँ–

मैंने अपने छोटे भाई का टोपा उठाकर सिर पर रखा। कुछ अजीब लगा।

अच्छा भी और मज़ाकिया भी।

तब की बात थी, अब तो चेहरे के साथ घुल-मिल गया है चश्मा। जब कभी उतरा हुआ होता है तो चेहरा खाली-खाली लगने लगता है।

याद आ गया वह टोपा, काली फ्रेम का चश्मा और लंगूर की सूरत! हाँ, इन दिनों शिमला में मैं सिर पर टोपी लगाना पसंद करती हूँ। मैंने कई रंगों की जमा कर ली हैं। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ!

❑ *कृष्णा सोबती*

सुनिए–बोलिए

1. आपको बचपन कैसा लगता है?
2. अपने बचपन की कोई मीठी याद सुनाइए।
3. बचपन की याद बार–बार क्यों आती है? सोचिए और बताइए।

पढ़िए

1. लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या–क्या काम करती थी?
2. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।'–इस बात के लिए लेखिका क्या–क्या उदाहरण देती है?
3. लेखिका ने शनीचर शब्द का प्रयोग किस दिन के लिए किया है? उस दिन वह क्या करती थी?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. लेखिका अपने बचपन में कौन–कौन सी चीज़ें मज़ा ले लेकर खाती थी? उनमें से आपको कौन सी चीजें पसंद हैं और क्यों ?
2. चने के बारे में लेखिका ने जो कहा है क्या आप उससे सहमत हैं? कारण बताइए ।
3. लेखिका ने इस संस्मरण में सरवर के माध्यम से अपनी बात बताने की कोशिश की है, लेकिन सरवर का कोई परिचय नहीं दिया गया है। अनुमान लगाइए कि सरवर कौन हो सकता है
4. अपने बचपन के बारे में लिखिए।

शब्द भंडार

1. लेखिका चॉकलेट मज़े से खाती थी। आप कौन–सी चीज़ें मजे से खाते हैं?

   जैसे: लड्डू, ..., ..., ...

   ...., ..., ...
2. शुरू–शुरू में चश्मा लगाना बड़ा <u>अटपटा</u> लगा। रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आँख पर चश्मा लगाया
ताकि सूझे दूर की
यह नहीं लड़की को मालूम
सूरत बनी लंगूर की।

आप भी इसी तरह की कविता लिखिए।

सुभद्राकुमारी चौहान की यह कविता भी पढ़िए–

बार–बार आती है मुझ को,
मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की,
सबसे मस्त खुशी मेरी।।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

2. कृष्णा सोबती का बचपन आप को कैसा लगा? मित्र को पत्र लिखकर बताइए।

भाषा की बात

1. क्रियाओं से भी भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे मारना से **मार**, काटना से **काट**, हारना से हार, सीखना से **सीख**, पलटना से **पलट** और हड़पना से **हड़प** आदि भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं। आप भी इस संस्मरण से कुछ क्रियाओं को छाँटकर लिखिए और उनसे भाववाचक संज्ञा बनाइए।

2. **चार** दिन, कुछ व्यक्ति, **एक** लीटर दूध आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि इसमें चार, कुछ और लीटर शब्द से संख्या या परिमाण का आभास होता है, क्योंकि ये संख्यावाचक विशेषण हैं। इसमें भी **चार** दिन से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इसको निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं और **कुछ** व्यक्ति से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं! इसी प्रकार **एक लीटर** दूध से परिमाण का बोध होता है इसलिए इसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

- अब आप नीचे लिखे वाक्य को पढ़िए और उनके सामने विशेषण के भेद लिखिए–

(क) मुझे दो दर्जन केले चाहिए।
(ख) दो किलो अनाज दे दो।
(ग) कुछ बच्चे आ रहे हैं।
(घ) सभी लोग हँस रहे थे।
(ङ) तुम्हारा नाम बहुत सुंदर है।

3. कपड़ों में मेरी दिलचस्पियाँ मेरी मौसी जानती थीं।

- इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'दिलचस्पियाँ' और 'मौसी' संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं। सर्वनाम कभी–कभी विशेषण का काम भी करते हैं। पाठ में से ऐसे पाँच उदाहरण छाँटकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर पात्राभिनय कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - I

3. जो देखकर भी नहीं देखते

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस चित्र को देखकर आपके मन में क्या विचार आ रहे हैं?
3. यदि यह देख नहीं सकती तो उसे कुत्ते को स्पर्श करते समय क्या आभास हो रहा होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कभी–कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटीं। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या–क्या देखा?"

"कुछ खास तो नहीं," उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे? मुझे – जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता– सैकड़ों रोचक चीज़ें मिलती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज–पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी–कभी मेरा दिल इन सब चीज़ों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीज़ों को सिर्फ़ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। परंतु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग–अलग सुंदर रंग

SCERT TELANGANA

उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज़ समझते हैं, जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

❑ *हेलेन केलर*

लेखिका के बारे में

हेलेन केलर (1880-1968, अमेरिका) एक ऐसा नाम है जो घोर अंधकार के बीच भी रोशनी देता रहा। कल्पना कीजिए कि जो न सुन सकता हो, न देख सकता हो फिर भी वह लिखना-पढ़ना और बोलना सीख ले, भरपूर आशा-आकांक्षा के साथ जीवन जीने लगे और उसके योगदान दुनिया के लिए यादगार बन जाएँ! ऐसी थीं हेलेन केलर। जब वे डेढ़ वर्ष की थीं, बचपन की एक गंभीर बीमारी की वजह से उनकी देखने और सुनने की शक्ति जाती रही, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। कॉलेज के दिनों में ही प्रकाशित अपनी आत्मकथा 'स्टोरी ऑफ़ लाइफ़' में वे लिखती हैं-"मुझे ये तो याद नहीं कि ऐसा कैसे हुआ, लेकिन ऐसा लगता था कि रात कभी खत्म क्यों नहीं होती और सुबह क्यों नहीं आती।" दुनिया की सभी भाषाओं में इस किताब के अनुवाद हुए हैं। इसके अलावा भी उनकी दस पुस्तकें और सैकड़ों लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने दुनियाभर में घूम-घूमकर अपने जैसे लोगों के अधिकारों और विश्वशांति के लिए काम किया। हेलेन केलर भारत भी आई थीं।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं– हेलन केलर को ऐसा क्यों लगता था?
2. जो लोग आँखों से देख नहीं पाते, वे दूसरों के द्वारा देखी गयी चीज़ों की प्रशंसा सुनकर क्या सोचते होंगे?
3. अगर आपकी कक्षा में ऐसा बच्चा दाख़िला ले जिसे दिखायी न देता हो, तो आप उसके लिए विद्यालय में क्या–क्या व्यवस्था करवाना चाहेंगे?

पढ़िए

1. हेलन केलर वसंत के दौरान टहनियों में क्या खोजती थीं?
2. हेलन केलर की सहेली कहाँ से लौटी थी?
3. हेलन केलर किस पेड़ की चिकनी छाल छूकर पहचान लेती थीं?
4. हेलन केलर किस पेड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती थीं?
5. मनुष्य हमेशा किन चीज़ों की आस लगाये रहता है?

लिखिए

1. 'प्रकृति का जादू' से क्या तात्पर्य है ?
2. "जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा–भरा किया जा सकता है।"- आपकी दृष्टि से इस पंक्ति का क्या अर्थ हो सकता है?
3. कान से न सुन पाने पर आस–पास की दुनिया कैसी लगती होगी?

शब्द भंडार

1. हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का प्रयोग सबसे अधिक करते हैं। ऐसी चीज़ों के अहसासों की तालिका बनाइए जो तुम बाकी चार इंद्रियों से महसूस करते हो।

सुनकर	चखकर	सूँघकर	छूकर

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. हेलन केलर का एकल अभिनय पट लिखकर अभिनय कीजिए।

प्रशंसा

1. बस में जाते समय यदि तुम बैठे हुए हो और कोई बूढ़ा आदमी खड़ा है–
   (क) बगल में जगह दूँगा। (ख) खड़े होकर अपने स्थान पर बैठाऊँगा। (ग) ध्यान नहीं दूँगा
2. तुम्हारे द्वारा भाग लिए किसी प्रतियोगिता में यदि तुमसे कोई अच्छा गाता है तो–
   (क) निंदा करूँगा (ख) प्रशंसा करूँगा (ग) प्रतिक्रिया नहीं करूँगा
3. यदि तुम्हारी कक्षा में कोई नया छात्र या छात्रा आये तो –
   (क) मैं ही पहले बात करूँगा (ख) दूर रहूँगा (ग) आवश्यक सहायता करूँगा
4. विशेष आवश्यकता वाले बालकों के प्रति –
   (क) दया दिखाऊँगा (ख) दूर रहूँगा (ग) सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करूँगा
5. दूसरी भाषाओं से मुझे.........है।
   (क) भय (ख) नापसंद (ग) रूचि

भाषा की बात

1. पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताइए कि किन चीज़ों का स्पर्श ऐसा होता है–

चिकना	....	चिपचिपा	....
मुलायम	....	खुरदरा	....
सख्त	....	भुरभुरा	....

2. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा।

- ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ़ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। आगे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़िए और समझिए। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखिए।

SCERT TELANGANA

परियोजना कार्य

1. किसी एक **विशेष आवश्यकता वाली** महिला या पुरुष के बारे में जानकारी एकत्र करके लिखिए, **जिसने दुनिया में** अपना नाम और देश का नाम प्रसिद्ध **किया है** ।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर प्रकृति वर्णन कर सकता/सकती हूँ।		

सुनहरे वचन

मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

SCERT TELANGANA

इकाई - I

4. अक्षरों का महत्व

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. अनुमान लगाओ कि यह चित्र कब बनाया गया होगा?
3. ऐसी धरोहरों को संभाल कर रखने के पीछे क्या उद्‌देश्य हो सकता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

अक्षरों की कहानी...

यह पुस्तक अक्षरों से बनी है। सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह-तरह की पुस्तकें। तरह-तरह के अक्षर।

दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं। हज़ारों पुस्तकें रोज़ छपती हैं। तरह-तरह के अक्षरों में हज़ारों की तादाद में रोज़ ही समाचार-पत्र छपते रहते हैं। इन सबके मूल में हैं अक्षर। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता, तो आज इस दुनिया का क्या हाल होता।

कोई कह सकता है कि हम अक्षरों को अनादि काल से जानते हैं। अक्षरों का ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला है।

पुराने ज़माने के लोग सचमुच ही सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं, बल्कि स्वयं आदमी ने की है। अब तो हम यह भी जानते हैं कि किन अक्षरों की खोज किस देश में किस समय हुई!

हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है। दो-तीन अरब साल तक इस धरती पर किसी प्रकार के जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोड़ों साल तक केवल जानवरों और वनस्पतियों का ही इस धरती पर राज्य रहा। आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसे के भी औज़ार बनाए।

SCERT TELANGANA

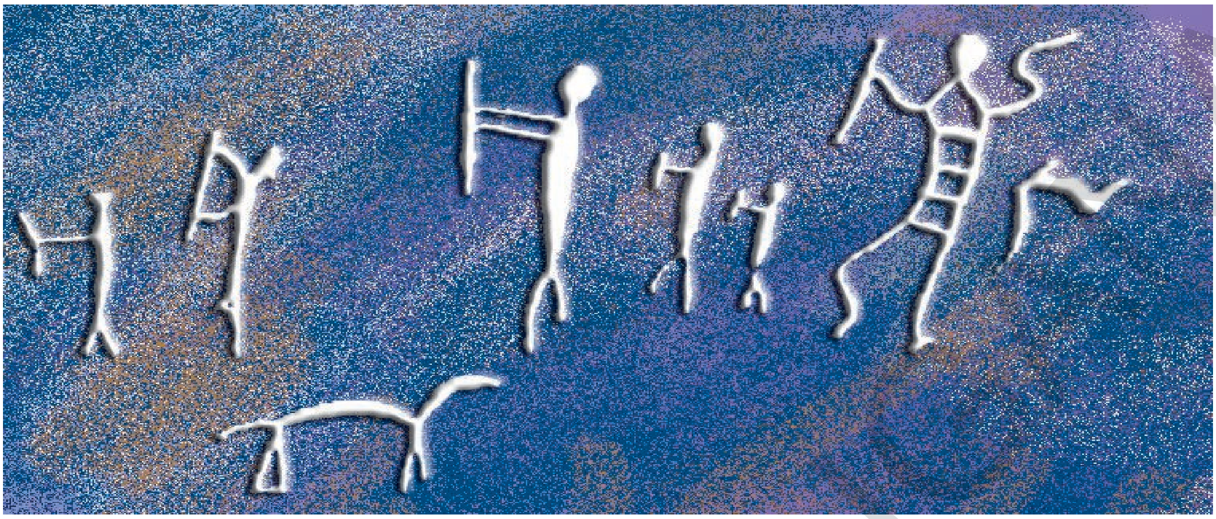

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे, पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल!

अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तबसे मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं। अतः हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले कुछ हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या-क्या सोचता था, कौन-कौन राजा हुए इत्यादि।

अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी करने लगी। अक्षरों की खोज करने के बाद पिछले छह हज़ार सालों में मानव जाति का तेज़ी से विकास हुआ।

यह महत्त्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई लिपियों का। अतः हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए। आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी है भी।

गुणाकर मुले

सुनिए–बोलिए

1. प्राचीन काल में लोग कैसे रहते थे?
2. किसके ज्ञान से मनुष्य सभ्य बन पाया?
3. प्राचीन समय से वर्तमान समय तक क्या परिवर्तन हुए हैं? उदाहरण सहित बताइए।

पढ़िए

1. पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई?
2. अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ? पाठ के आधार पर बताइए।
3. अक्षरों के ज्ञान से पहले मनुष्य अपनी बात को दूर–दराज़ के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन–किन माध्यमों का सहारा लेता था?

लिखिए

1. अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि के महत्व के बारे में जितना जानते हैं उसे लिखिए।
2. मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्व होता है? अपने विचार लिखिए।
3. हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी–न–किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है, लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों?

शब्द भंडार

1. प्राचीन समय और वर्तमान समय पर ध्यान दीजिए। वर्तमान समय **की** कुछ चीज़ों के नाम **बताइए** जो प्राचीन समय में नहीं थीं।
   जैसे– बस, ..., ..., ...
2. आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। रेखांकित शब्द से दो वाक्य बनाइए।

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

जीवन में भाषा और लिपि का अधिक महत्व है। भाषा के महत्व पर कविता लिखिए।

प्रशंसा

- 'अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा।' अक्षरों के ज्ञान से क्या-क्या लाभ हो सकते हैं, अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. अनादि काल में रेखांकित शब्द का अर्थ है जिसकी कोई शुरुआत या आदि न हो। यह शब्द मूल शब्द के शुरू में कुछ जोड़ने से बना है। इसे उपसर्ग कहते हैं। इन उपसर्गों को अलग करके मूल शब्दों को मिलाकर उनका अर्थ समझिए –

असफल..............................	अदृश्य ....
अनुचित..............................	अनावश्यक..............................
अपरिचित..............................	अनिच्छा................................

2. वैसे तो संख्याएँ संज्ञा होती हैं पर कभी-कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं, जैसे नीचे लिखे वाक्य में-

हमारी धरती लगभग **पाँच अरब** साल पुरानी है।

कोई **दस हज़ार** साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया।

इन वाक्यों में रेखांकित अंश 'साल' संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी दे रहे हैं, इसलिए संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का इस्तेमाल उन्हीं चीज़ों के लिए होता है जिन्हें गिना जा सके, जैसे- चार संतरे, पाँच संतरे, पाँच बच्चे, तीन शहर आदि। पर यदि किसी चीज़ को गिना नहीं जा सकता तो उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा मापतोल आदि के शब्दों का इस्तेमाल भी किया जाता है-

SCERT TELANGANA

तीन जग पानी

एक किलो चीनी

प्याला	कटोरी	एकड़	मीटर
लीटर	किलो	ट्रूक	चम्मच

तीन .... खीर	दो .... ज़मीन
छह .... कपड़ा	एक .... रेत
दो .... कॉफी	पाँच...................... बाजरा
एक .... दूध	तीन .... तेल

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. भाषा का महत्व बताते हुए उसकी कविता में अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - I

मैं सबसे छोटी होऊँ (उपवाचक)

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा अंचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!
अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!
ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,
तेरे अंचल की छाया में
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ–दिखा दे चंद्रोदय!

❑ *सुमित्रानंदन पंत*

प्रश्न

1. कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है?
2. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है? क्या आप भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करेंगे?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
   साथ नहीं फिरती दिन-रात!
4. अपने छुटपन में बच्चे अपनी माँ के बहुत करीब होते हैं। इस कविता में नज़दीकी की कौन-कौन सी स्थितियाँ बताई गई हैं?

SCERT TELANGANA

इकाई - II

5. चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. माँ अपने बेटे को क्या बता रही होगी?
3. आप चाँद-तारों के बारे में आप क्या जानते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

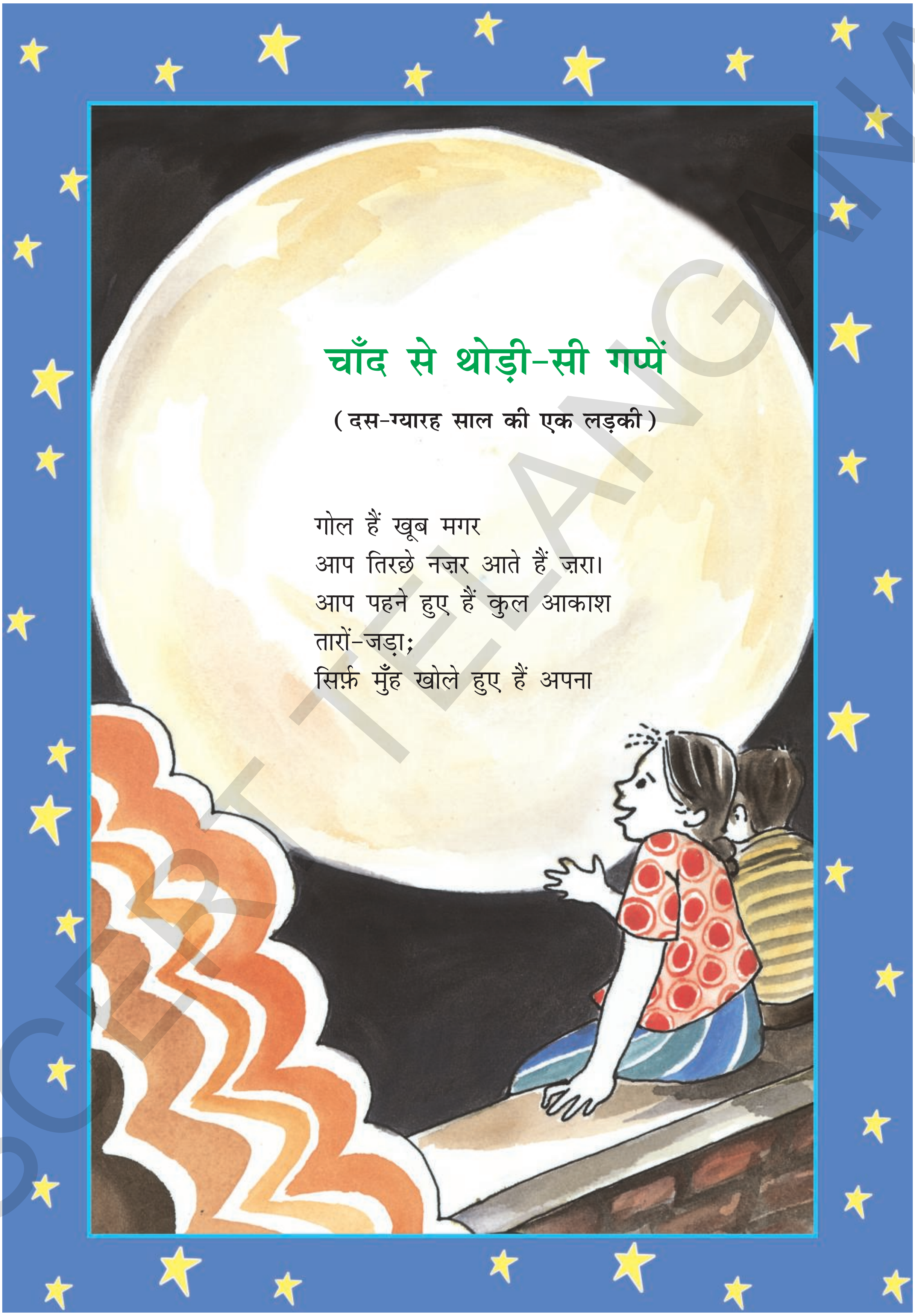

चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

(दस-ग्यारह साल की एक लड़की)

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना

SCERT TELANGANA

गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है:
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं–
दम नहीं लेते हैं जब तक बि ल कु ल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

❑ *शमशेर बहादुर सिंह*

सुनिए-बोलिए

1. आकाश में क्या-क्या दिखायी देते हैं?
2. आपको चाँद कैसा लगता है? बताइए।
3. अगर सूरज, चाँद, तारे नहीं होते तो क्या होता?

पढ़िए

1. 'आप पहने हुए हैं कुल आकाश' के माध्यम से लड़की कहना चाहती है कि–

(क) चाँद तारों से जड़ी हुई चादर ओढ़कर बैठा है।

(ख) चाँद की पोशाक चारों दिशाओं में फैली हुई है। आप किसे सही मानते हैं?

2. 'हमें बुद्धू मत समझना'-दस-ग्यारह साल की लड़की इसके पक्ष में चाँद से क्या कहती है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. बालिका ने चाँद की बीमारी को लाइलाज क्यों कहा होगा?
2. 'तारों जड़ा आकाश पहनने' से कवि का क्या तात्पर्य है?
3. एक दस-ग्यारह वर्ष की बालिका चाँद के स्वरूप के विषय में क्या सोचती है?
4. बच्चों ने चाँद से गप्पें किस दिन लगाई होंगी? इस कविता में आई बातों की मदद से अनुमान लगाइए और उसका कारण भी बताइए।

   दिन   कारण

   पूर्णिमा..

   अष्टमी से पूर्णिमा के बीच...

   प्रथम से अष्टमी के बीच..

5. कुछ लोग बड़ी जल्दी चिढ़ जाते हैं। यदि चाँद का स्वभाव भी आसानी से चिढ़ जाने का हो तो वह किन बातों से सबसे ज़्यादा चिढ़ेगा? चिढ़कर वह उन बातों का क्या जवाब देगा? अपनी कल्पना से चाँद की ओर से दिए गए जवाब लिखिए।

शब्द भंडार

1. चाँद के आकार में दिखायी देने वाली कुछ वस्तुओं के नाम लिखिए।

   जैसे- रोटी, ..., ..., ..., ...

   ...., ..., ..., ...

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ यदि कोई सूरज से गप्पें लगाएँ तो वह क्या लिखेगा? अपनी कल्पना से कविता के रूप में लिखिए।

प्रशंसा

■ चाँद जिस तरह अंधेरी रातों में रोशनी फैलाता है, उसी तरह आप अपने जीवन में ऐसे कौन-से काम करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. **चाँद** संज्ञा है। चाँदनी रात में **चाँदनी** विशेषण है।
नीचे दिए गए विशेषणों को ध्यान से देखिए और बताइए कि–
(क) कौन–सा प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण बन रहे हैं।
(ख) इन विशेषणों के लिए एक–एक उपयुक्त संज्ञा भी लिखिए–

गुलाबी पगड़ी	मखमली घास	कीमती गहने
ठंडी रात	जंगली फूल	कश्मीरी भाषा

2. गोल–मटोल गोरा–चिट्टा
कविता में आए शब्दों के इन जोड़ों में अंतर यह है कि चिट्टा का अर्थ सफेद है और गोरा से मिलता–जुलता है, जबकि मटोल अपने–आप में कोई शब्द नहीं है। यह शब्द –मोटा' से बना है। ऐसे चार–चार शब्द युग्म सोचकर लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
3. 'बिलकुल गोल'–कविता में इसके दो अर्थ हैं–
(क) गोल आकार का
(ख) गायब होना!
ऐसे तीन और शब्द सोचकर, उनसे ऐसे वाक्य बनाइए जिनके दो–दो अर्थ निकलते हों।
4. ताकि, जबकि, चूँकि, हालाँकि–कविता की जिन पंक्तियों में ये शब्द आए हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य बनाइए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के कविताओं का भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविताओं के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से नयी कविता लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - II

6. संसार पुस्तक है

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. अनुमान लगाओ कि बच्चा किस विषय की पुस्तक पढ़ रहा है?
3. पुस्तक पढ़ना क्यों ज़रूरी है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा, उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों से पहले सिर्फ़ जानवर थे और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का खयाल करना भी मुश्किल है, जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जाननेवालों और विद्वानों ने,

SCERT TELANGANA

जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गरम थी और इस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर

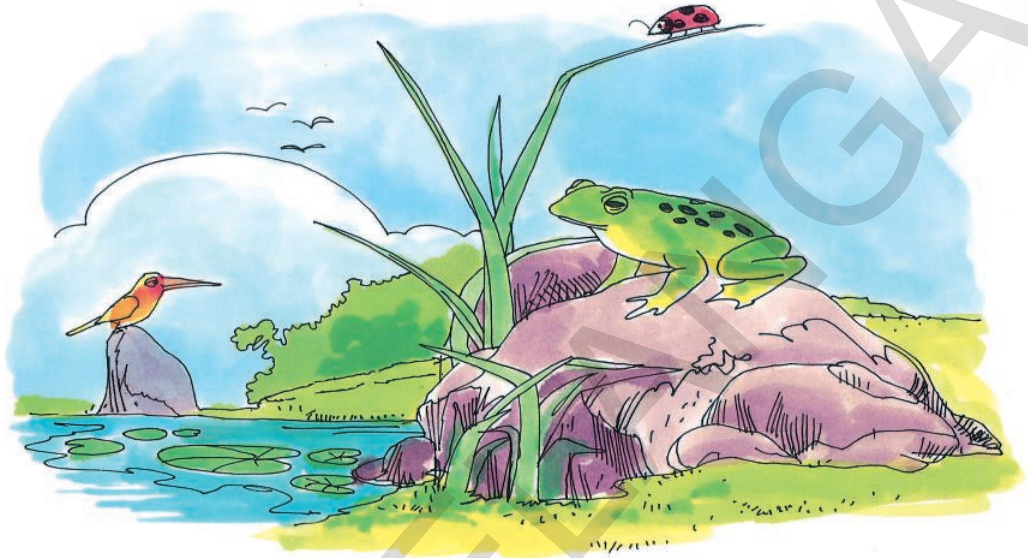

रहा होगा।

तुम इतिहास की किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीज़ें हैं, जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नयी बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।

SCERT TELANGANA

कोई ज़बान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसके पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेलकर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक ज़र्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

❑ *जवाहरलाल नेहरू*
(अंग्रेज़ी से अनुवाद–प्रेमचंद)

लेखक के बारे में

जवाहरलाल नेहरू (14 नवम्बर 1889–27 मई 1964) आज़ाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। बच्चों से उन्हें बेहद लगाव था। वे 'चाचा नेहरू' के नाम से जाने जाते हैं। उनकी बेटी इंदिरा जब 10 वर्ष की थीं, नेहरू जी ने उन्हें अनेक चिट्ठियाँ लिखीं। इनमें बताया गया है कि पृथ्वी की शुरुआत कैसे हुई और मनुष्य ने अपने आप को कैसे धीरे-धीरे समझा-पहचाना। ये चिट्ठियाँ बच्चों में अपने आस-पास की दुनिया के बारे में सोचने-समझने और जानने की उत्सुकता पैदा करती हैं। नेहरू जी को अपने देश के बारे में बोलने-बताने में विशेष आनंद आता था। ये सभी चिट्ठियाँ 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक में संकलित हैं। 'संसार पुस्तक है' इसी पुस्तक से साभार लिया गया है। खास बात यह है कि ये पत्र नेहरू जी ने अंग्रेज़ी में लिखे थे और इनका हिंदी में अनुवाद हिंदी के मशहूर उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद ने किया है।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. आप किस–किस के द्वारा ज्ञानार्जन करते हैं?
2. मनुष्य का सबसे अच्छा मित्र कौन है और क्यों?
3. कुछ पुस्तकों के नाम बताइए और बताइए कि उनमें से आपकी पसंदीदा पुस्तक कौन–सी है और क्यों?

पढ़िए

1. लेखक ने 'प्रकृति के अक्षर' किन्हें कहा है?
2. लाखों–करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?
3. गोल, चमकीला रोड़ा अपनी क्या कहानी बताता है?

लिखिए

1. दुनिया का पुराना हाल किन चीज़ों से जाना जाता है? कुछ चीज़ों के नाम लिखिए।
2. गोल, चमकीले रोड़े को यदि दरिया और आगे ले जाता है तो क्या होता है? विस्तार से लिखिए।
3. नेहरू जी ने इस बात का हलका–सा संकेत दिया है कि दुनिया कैसे शुरू हुई होगी। दुनिया की शुरुआत के संबंध में आपके क्या विचार हैं?
4. आप जानते हैं कि दो पत्थरों को रगड़कर आदिम मानव ने आग की खोज की थी। उस युग में पत्थरों का और क्या–क्या उपयोग होता था?

शब्द भंडार

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर, उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   1. सिर्फ 2. खूब 3. हाल 4. टापू 5. रोड़ा

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. हर चीज़ के निर्माण की एक कहानी होती है, जैसे मकान के निर्माण की कहानी, वायुयान, साइकिल अथवा अन्य किसी यंत्र के निर्माण की कहानी। आप भी अपनी किसी मनपसंद चीज़ के निर्माण की कहानी लिखिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

1. इस पाठ से सुंदर भावाभिव्यक्ति वाले पाँच वाक्य **लिखिए** और **बताइए** कि उनका हमारे जीवन में क्या महत्व है?

भाषा की बात

1. 'इस बीच वह दरिया में **लुढ़कता** रहा।' नीचे लिखी क्रियाएँ **पढ़िए**। इनमें और 'लुढ़कना' में **आपको** कोई समानता नज़र आती है?

   ढकेलना   गिरना   खिसकना

   इन चारों क्रियाओं का अंतर समझाने के लिए इनसे वाक्य **बनाइए**।

2. चमकीला रोड़ा–यहाँ रेखांकित विशेषण 'चमक' संज्ञा में 'ईला' प्रत्यय जोड़ने पर बना है। निम्नलिखित शब्दों में यही प्रत्यय जोड़कर विशेषण **बनाइए** और इनके साथ उपयुक्त संज्ञाएँ लिखिए–

   पत्थर .... काँटा ....

   रस .... ज़हर ....

3. 'जब तुम मेरे साथ रहती हो, तो अक्सर मुझसे बहुत–सी बातें पूछा करती हो।'
   यह वाक्य दो वाक्यों को मिलाकर बना है। इन दोनों वाक्यों को जोड़ने का काम जब–तो (तब) कर रहे हैं, इसलिए इन्हें **योजक** कहते हैं। योजक के रूप में कभी कोई बदलाव नहीं आता, इसलिए वे अव्यय का एक प्रकार होते हैं। नीचे वाक्यों को जोड़ने वाले कुछ और अव्यय दिए गए हैं। बल्कि/इसलिए/परंतु/कि/यदि/तो/न कि/या/ताकि। उन्हें रिक्त स्थानों में लिखिए। इन शब्दों से आप भी एक–एक वाक्य बनाइए–

   (क) कृष्णन फिल्म देखना चाहता है ....उसके पास टिकट नहीं है।
   (ख) मुनिया ने सपना देखा .... वह चंद्रमा पर बैठी है।
   (ग) छुट्टियों में हम सब .... दुर्गापुर जाएँगे .... जालंधर।
   (घ) सब्ज़ी कटवा कर रखना .... घर आते ही मैं खाना बना लूँ।
   (ङ) .... मुझे पता होता कि शमीना बुरा मान जाएगी .... मैं यह बात न कहती।
   (च) इस वर्ष फसल अच्छी नहीं हुई है .... अनाज महँगा है।
   (छ) विमल जर्मन सीख रहा है .... फ्रेंच।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस पाठ के आधार पर संसार के उद्‌भव की कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - II

7. पार नज़र के

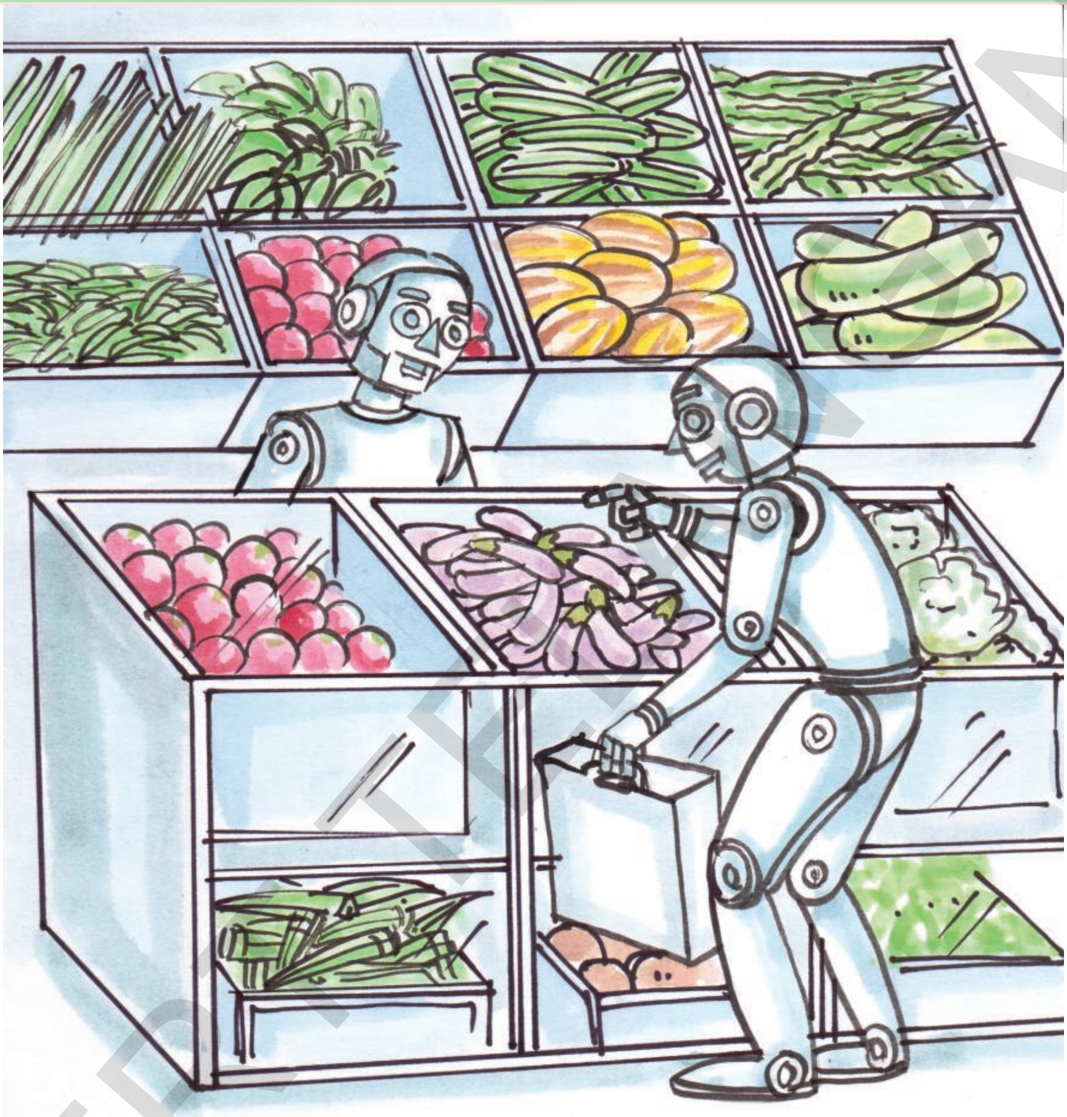

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. रोबोट कौन–सी सब्ज़ी खरीद रहा होगा?
3. आपके पास रोबोट होता तो आप उससे क्या–क्या काम करवाते?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

वह एक सुरंगनुमा रास्ता था। आम आदमी के लिए इस रास्ते से होते हुए जाने की मनाही थी. ..लेकिन छोटू ने एक दिन अपने पापा का सिक्योरिटी-पास लिया और जा पहुँचा सुरंग में...फिर क्या हुआ?

"छोटू! कितनी बार कहा है तुमसे कि उस तरफ़ मत जाया करो!"

"फिर पापा क्यों जाते हैं उस तरफ़ रोज़-रोज़?"

"पापा को काम पर जाना होता है।"

रोज़ाना यही वार्तालाप हुआ करता था छोटू की माँ और छोटू के बीच। उस तरफ़ एक सुरंगनुमा रास्ता था और छोटू के पापा इसी सुरंग से होते हुए काम पर जाया करते थे। आम आदमी के लिए इस रास्ते से जाने की मनाही थी। चंद चुनिंदा लोग ही इस सुरंगनुमा रास्ते का इस्तेमाल कर सकते थे और छोटू के पापा इन्हीं चुनिंदा लोगों में से एक थे।

आज छुट्टी थी और छोटू के पापा घर ही पर आराम फ़रमा रहे थे। नज़र बचाकर, चोरी-छिपे छोटू ने पापा का सिक्योरिटी-पास हथिया ही लिया और चल दिया सुरंग की तरफ़।

वैसे तो उनकी पूरी कालोनी ही ज़मीन के नीचे बसी थी। यह जो सुरंगनुमा रास्ता था—अंदर दीये जल रहे थे और प्रवेश करने से पहले एक बंद दरवाज़े का सामना करना पड़ता था। दरवाज़े में एक खाँचा बना हुआ था। छोटू ने खाँचे में कार्ड डाला, तुरंत दरवाज़ा खुल गया। छोटू ने सुरंग में प्रवेश किया। अंदर वाले खाँचे में सिक्योरिटी-पास आ पहुँचा था। उसे उठा लिया, कार्ड उठाते ही दरवाज़ा बंद हुआ। छोटू ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। सुरंगनुमा वह रास्ता ऊपर की तरफ़ जाता था....यानी ज़मीन के ऊपर का सफ़र कर आने का मौका मिल गया था।

मगर कहाँ? मौका हाथ लगते ही फिसल गया! सुरंग में जगह-जगह लगाए निरीक्षक यंत्रों की जानकारी छोटू को नहीं थी। मगर छोटू के प्रवेश करते ही पहले निरीक्षक यंत्र में संदेहास्पद स्थिति

SCERT TELANGANA

दर्शाने वाली हरकत हुई, इतने छोटे कद का व्यक्ति सुरंग में कैसे आया? दूसरे निरीक्षक यंत्र ने तुरंत छोटू की तसवीर खींच ली। किसी एक नियंत्रण केंद्र में इस तसवीर की जाँच की गई और खतरे की सूचना दी गई।

इन सारी गतिविधियों से अनजान छोटू आगे बढ़ रहा था। तभी जाने कहाँ से सिपाही दौड़े चले आए। छोटू को पकड़कर वापस घर छोड़ आए। घर पर माँ छोटू का इंतज़ार कर रही थी। बस, अब छोटू की खैरियत न थी। छोटू के पापा न होते तो छोटू का बचना मुश्किल था।

"छोड़ो भी! मैं इसे समझा दूँगा सब। फिर वह ऐसी गलती कभी नहीं करेगा।" पापा ने छोटू को बचा लिया। बोले, "छोटू, मैं जहाँ काम करता हूँ न, वह क्षेत्र ज़मीन से ऊपर है। आम आदमी वहाँ नहीं जा सकता, क्योंकि वहाँ के माहौल में जी ही नहीं सकता।"

"तो फिर आप कैसे जाते हैं वहाँ?" छोटू का सवाल लाज़िमी था।

"मैं वहाँ एक खास किस्म का स्पेस-सूट पहनकर जाता हूँ। इस स्पेस-सूट से मुझे ऑक्सीजन मिलता है, जिससे मैं साँस ले सकता हूँ। इसी स्पेस-सूट की वजह से बाहर की ठंड से मैं अपने आपको बचा सकता हूँ। खास किस्म के जूतों की वजह से ज़मीन के ऊपर मेरा चलना मुमकिन होता है। ज़मीन के ऊपर चलने-फिरने के लिए हमें एक विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है।"

छोटू सुन रहा था। पापा आगे बताने लगे, "एक समय था, जब अपने मंगल ग्रह पर सभी लोग ज़मीन के ऊपर ही रहते थे। बगैर किसी तरह के यंत्रों की मदद के, बगैर किसी खास किस्म की पोशाक के, हमारे पुरखे ज़मीन के ऊपर रहा करते थे लेकिन धीरे-धीरे वातावरण में परिवर्तन आने लगा। कई तरह के जीव धरती पर रहा करते थे, एक के बाद एक सब मरने लगे। इस परिवर्तन की जड़ में था—सूरज में हुआ परिवर्तन। सूरज से हमें रोशनी मिलती है, ऊष्णता मिलती है। इन्हीं तत्त्वों से जीवों का पोषण होता है। सूरज में परिवर्तन होते ही यहाँ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया। प्रकृति के बदले हुए रूप का सामना करने में यहाँ के पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, अन्य जीव अक्षम साबित हुए। केवल हमारे पूर्वजों ने इस स्थिति का सामना किया।

"अपने तकनीकी ज्ञान के आधार पर हमने ज़मीन के नीचे अपना घर बना लिया। ज़मीन के ऊपर लगे विभिन्न यंत्रों के सहारे हम सूर्य-शक्ति, सूरज की रोशनी और गर्मी का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। उन्हीं यंत्रों के सहारे हम यहाँ ज़मीन के नीचे जी रहे हैं। यंत्र सुचारु रूप से चलते रहें, इसके लिए बड़ी सतर्कता बरतनी पड़ती है। मुझ जैसे कुछ चुनिंदा लोग इन्हीं यंत्रों का ध्यान रखते हैं।"

"बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी यही काम करूँगा।" छोटू ने अपनी मंशा ज़ाहिर की।

"बिलकुल! मगर उसके लिए खूब पढ़ना होगा। माँ और पापा की बात सुननी होगी!" माँ ने कहा।

दूसरे दिन छोटू के पापा काम पर चले गए। देखा तो कंट्रोल रूम का वातावरण बदला-बदला-सा था। शिफ़्ट खत्म कर घर जा रहे स्टाफ़ के प्रमुख ने टी.वी. स्क्रीन की तरफ़ इशारा किया। स्क्रीन पर एक बिंदु झलक रहा था। वह बताने लगा, "यह कोई आसमान का तारा नहीं है, क्योंकि कंप्यूटर

SCERT TELANGANA

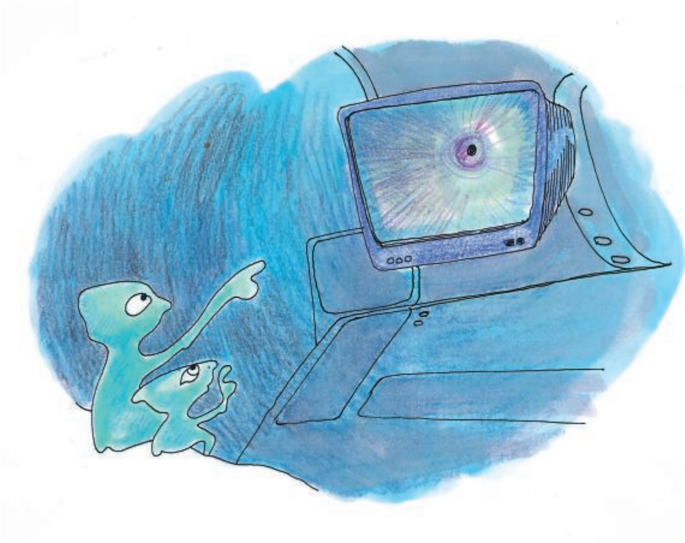

से पता चल रहा है कि यह अपनी जगह अडिग नहीं रहा है। पिछले कुछ घंटों के दौरान इसने अपनी जगह बदली है। कंप्यूटर के अनुसार यह हमारी धरती की तरफ़ बढ़ता चला आ रहा है।"

"अंतरिक्ष यान तो नहीं है?" छोटू के पापा ने अपना संदेह प्रकट किया।

"संदेह हमें भी है। आप अब इस पर बराबर ध्यान रखिएगा।"

छोटू के पापा सोच में डूब गए।

क्या सचमुच अंतरिक्ष यान होगा? कहाँ से आ रहा होगा? सौर मंडल में हमारी धरती के अलावा और कौन से ग्रह पर जीवों का अस्तित्व होगा? कैसे हो सकता है? और अगर होगा भी तो क्या इतनी प्रगति कर चुका होगा कि अंतरिक्ष यान छोड़ सके?... वैसे तो हमारे पूर्वजों ने भी अंतरिक्ष यानों, उपग्रहों का प्रयोग किया था। मगर अब हमारे लिए यह असंभव है। उसके लिए आवश्यक मात्रा में ऊर्जा तो हो! काश! इस नए मेहमान को नज़दीक से देखा जा सकता! हाँ अगर वह इसी तरफ़ आ रहा होगा, तब तो यह संभव हो सकेगा। देखें।

...अब अंतरिक्ष यान से एक यांत्रिक हाथ बाहर निकला। हर पल उसकी लंबाई बढ़ती ही जा रही थी...

छोटू के पापा ने अवलोकन जारी रखा।

कालोनी की प्रबंध समिति की सभा बुलाई गई थी। अध्यक्ष भाषण दे रहे थे, "हाल ही में मिली जानकारी से पता चलता है कि दो अंतरिक्ष यान हमारे मंगल ग्रह की तरफ़ बढ़ते चले आ रहे हैं। इनमें से एक अंतरिक्ष यान हमारे गिर्द चक्कर काट रहा है। कंप्यूटर के अनुसार ये अंतरिक्ष यान नज़दीक के ही किसी ग्रह से छोड़े गए हैं। ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिए—इसकी कोई सुनिश्चित योजना बनानी ज़रूरी है। नंबर एक आपका क्या खयाल है?"

कालोनी की सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी नंबर एक पर थी। उन्होंने कुछ कागज़ समेटते हुए बोलना आरंभ किया, "इन दोनों अंतरिक्ष यानों को जलाकर खाक कर देने की क्षमता हम रखते हैं, मगर इससे हमें कोई जानकारी हासिल नहीं हो सकेगी। अंतरिक्ष यान बेकार कर ज़मीन पर उतरने पर मजबूर कर देने वाले

यंत्र हमारे पास नहीं हैं। हालाँकि, अगर ये अंतरिक्ष यान खुद-ब-खुद ज़मीन पर उतरते हैं, तो उन्हें बेकार कर देने की क्षमता हममें अवश्य है। मेरी जानकारी के अनुसार इन अंतरिक्ष यानों में सिर्फ़ यंत्र हैं। किसी तरह के जीव इनमें सवार नहीं हैं।"

"नंबर एक की बात सही लगती है।" नंबर दो एक वैज्ञानिक थे। वे बोले, "हालाँकि यंत्रों को बेकार कर देने में भी खतरा है। इनके बेकार होते ही दूसरे ग्रह के लोग हमारे बारे में जान जाएँगे। इसलिए मेरी राय में हमें सिर्फ़ अवलोकन करते रहना चाहिए।"

"जहाँ तक हो सके हमें अपने अस्तित्व को छिपाए ही रखना चाहिए, क्योंकि हो सकता है जिन लोगों ने अंतरिक्ष यान भेजे हैं, वे कल को इनसे भी बड़े सक्षम अंतरिक्ष यान भेजें। हमें यहाँ का प्रबंध कुछ इस तरह रखना चाहिए जिससे इन यंत्रों को यह गलतफ़हमी हो कि इस ज़मीन पर कोई भी चीज़ इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है कि जिससे वे लाभ उठा सकें। अध्यक्ष महोदय से मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि इस तरह का प्रबंध हमारे यहाँ किया जाए।" नंबर तीन सामाजिक व्यवस्था का काम देखते थे।

उनकी बात के जवाब में अध्यक्ष कुछ बोलने जा ही रहे थे कि फ़ोन की घंटी बजी। अध्यक्ष ने चोंगा उठाया, एक मिनट बाद सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "भाइयो, अंतरिक्ष यान क्रमाँक एक हमारी ज़मीन पर उतर चुका है।"

वह दिन छोटू के लिए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण दिन था। पापा उसे कंट्रोल रूम ले गए थे। यहाँ से अंतरिक्ष यान क्रमाँक एक साफ़ नज़र आ रहा था।

"कैसा अजीब लग रहा है यहाँ! इसके अंदर क्या होगा पापा?" छोटू ने पूछा।

"अभी नहीं बताया जा सकता। दूर से ही उसका निरीक्षण जारी है। उस पर बराबर हमारा ध्यान है और उसके हर अंग पर हमारा नियंत्रण है। वक्त आने पर ही हम अगला कदम उठाएँगे," छोटू के पापा ने बताया। उन्होंने छोटू को एक कॉन्सोल दिखाया, जिस पर कई बटन थे।

अब अंतरिक्ष यान से एक यांत्रिक हाथ बाहर निकला। हर पल उसकी लंबाई बढ़ती ही जा रही थी। वह शायद ज़मीन तक पहुँचकर मिट्टी उकेर लेना चाहता था। सब लोग स्क्रीन पर दिखाई दे रही अंतरिक्ष यान की इस हरकत को ध्यान से देख रहे थे—सिवा एक के, उसका ध्यान कहीं और ही था।

छोटू का सारा ध्यान था कॉन्सोल पैनेल पर। कॉन्सोल का एक बटन दबाने की अपनी इच्छा को

SCERT TELANGANA

वह रोक नहीं पाया। वह लाल-लाल बटन उसे बरबस अपनी तरफ खींच रहा था।

...और सहसा खतरे की घंटी बजी। सबकी निगाहें कॉन्सोल की तरफ मुड़ीं। पापा ने छोटू को अपनी तरफ़ खींचते हुए एक झापड़ रसीद कर दिया और लाल बटन को पूर्व स्थिति में ला रखा।

मगर उस तरफ़ अब अंतरिक्ष यान के उस यांत्रिक हाथ की हरकत सहसा रुक गई थी। यंत्र बेकार हो गया था।

उधर पृथ्वी पर नेशनल एअरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) द्वारा प्रस्तुत वक्तव्य ने सबका ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित कर लिया–

"मंगल की धरती पर उतरा हुआ अंतरिक्ष यान वाइकिंग अपना निर्धारित कार्य कर रहा है। हालाँकि किसी अज्ञात कारणवश अंतरिक्ष यान का यांत्रिक हाथ बेकार हो गया है। नासा के तकनीशियन इस बारे में जाँच कर रहे हैं तथा इस यांत्रिक हाथ को दुरुस्त करने के प्रयास भी जारी हैं..."

इसके कुछ ही दिनों बाद पृथ्वी के सभी प्रमुख अखबारों ने छापा–

"नासा के तकनीशियनों को रिमोट कंट्रोल के सहारे वाइकिंग को दुरुस्त करने में सफलता मिली है। यांत्रिक हाथ ने अब मंगल की मिट्टी के विभिन्न नमूने इकट्ठे करने का काम आरंभ कर दिया है..."

पृथ्वी के वैज्ञानिक मंगल की इस मिट्टी का अध्ययन करने के लिए बड़े उत्सुक थे। उन्हें उम्मीद थी कि इस मिट्टी के अध्ययन से इस बात का पता लगाया जा सकेगा कि क्या मंगल ग्रह पर भी पृथ्वी की ही तरह जीव सृष्टि का अस्तित्व है। यह प्रश्न आज भी एक रहस्य है।

❑ जयंत विष्णु नार्लीकर
(मराठी से अनुवाद–रेखा देशपांडे)

सुनिए–बोलिए

1. तुमने कहाँ की यात्रा की है? उसके बारे में लिखिए।
2. लोग यात्रा क्यों करते होंगे?
3. नयी जगह पर जाने पर कैसा लगता होगा? सोच कर बताइए।

पढ़िए

1. छोटू का परिवार कहाँ रहता था?
2. कंट्रोल रूम में जाकर छोटू ने क्या देखा और वहाँ उसने क्या हरकत की?
3. कहानी में अंतरिक्ष यान को किसने भेजा था और क्यों?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. छोटू को सुरंग में जाने की इजाज़त नहीं थी क्यों?
2. मंगल ग्रह पर जीवन क्यों समाप्त हो गया होगा?
3. आप नंबर एक, नंबर दो और नंबर तीन अजनबी से निबटने के कौन–से तरीके अपनाते ?

शब्द भंडार

1. अंतरिक्ष में जाने के लिए किन–किन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है? सोचिए और लिखिए।
   जैसे– स्पेस–सूट, ..., ..., ...
2. ज़मीन के ऊपर का सफ़र कर आने का मौका मिल गया था।
   (क) इस वाक्य में आये 'सफ़र' और 'मौका' शब्दों के पर्याय लिखिए।
   (ख) इस वाक्य को नकारात्मक भाव में लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. मान लीजिए कि आप छोटू हैं और यह कहानी किसी को सुना रहे हो तो कैसे सुनायेंगे? सोचिए और 'मैं' शैली में यह कहानी सुनाइए।

प्रशंसा

■ आज वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कार से कई लाभ हुए हैं। साथ ही साथ इससे कुछ खतरें भी हैं। वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग के प्रति हमें कैसी नैतिकता दिखलानी चाहिए।

भाषा की बात

1. 'वार्तालाप' शब्द वार्ता+आलाप के योग से बना है। यहाँ वार्ता के अंत का 'आ' और 'आलाप' के

SCERT TELANGANA

आरंभ का 'आ' मिलने से जो परिवर्तन हुआ है, उसे संधि कहते हैं। नीचे लिखे कुछ शब्दों में किन शब्दों की संधि है–

शिष्टाचार	श्रद्धांजलि	दिनांक
उत्तरांचल	सूर्यास्त	अल्पाहार

2. कार्ड उठाते ही दरवाज़ा बंद हुआ।
   यह बात हम इस तरीके से भी कह सकते हैं–
   जैसे ही कार्ड उठाया, दरवाज़ा बंद हो गया।
   दोनों वाक्यों में **जो** अंतर है, **उस पर ध्यान दीजिए।** ऐसे वाक्यों के तीन जोड़े स्वयं सोचकर लिखिए।
3. छोटू ने चारों तरफ **नज़र दौड़ाई।**
   छोटू ने चारों तरफ **देखा।**
   उपर्युक्त वाक्यों में समानता होते हुए भी अंतर है। मुहावरे वाक्यों को विशिष्ट अर्थ देते हैं। ऐसा ही मुहावरा पहली पंक्ति में दिखाई देता है। नीचे दिए गए वाक्यांशों में 'नज़र' के साथ अलग–अलग क्रियाओं का प्रयोग हुआ है, जिनसे मुहावरे बने हैं। इनके प्रयोग से वाक्य बनाइए–

नज़र पड़ना	नज़र रखना
नज़र आना	नज़रें नीची होना

4. नीचे एक ही शब्द के दो रूप दिए गए हैं। एक संज्ञा है और दूसरा विशेषण है। वाक्य बनाइए और बताइए कि इनमें से कौन से शब्द संज्ञा हैं और कौन से विशेषण–

आकर्षक–आकर्षण	प्रभाव–प्रभावशाली
प्रेरणा–प्रेरक	प्रतिभाशाली–प्रतिभा

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस पाठ के आधार पर अंतरिक्ष के बारे में कल्पना कर लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - II

झाँसी की रानी (उपवाचक)

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।

SCERT TELANGANA

बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

निःसंतान मरे राजा जी,
रानी शोक-समानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

रानी रोईं रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,

SCERT TELANGANA

सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपुर के ज़ेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',
यों परदे की इज़्ज़त पर-
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई
ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,

SCERT TELANGANA

अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती,
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ़्टिनेन्ट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

ज़ख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

SCERT TELANGANA

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी
अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी उसे
वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो
सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह

SCERT TELANGANA

हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

❑ *सुभद्रा कुमारी चौहान*
('मुकुल' से)

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. 'किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई'
(क) इस पंक्ति में किस घटना की ओर संकेत है?
(ख) काली घटा घिरने की बात क्यों कही गई है?
2. कविता की दूसरी पंक्ति में भारत को 'बूढ़ा' कहकर और उसमें 'नयी जवानी' आने की बात कहकर सुभद्रा कुमारी चौहान क्या बताना चाहती हैं?
3. झाँसी की रानी के जीवन की कहानी अपने शब्दों में लिखिए और यह भी बताइए कि उनका बचपन आपके बचपन से कैसे अलग था?
4. वीर महिला की इस कहानी में कौन-कौन से पुरुषों के नाम आए हैं? इतिहास की कुछ अन्य वीर स्त्रियों की कहानियाँ खोजिए।

इकाई - III

8. वन के मार्ग में

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. अनुमान लगाइए और बताइए कि चित्र में कौन–कौन हैं?
3. वन में लोगों को क्या–क्या कठिनाइयाँ होती होंगी?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

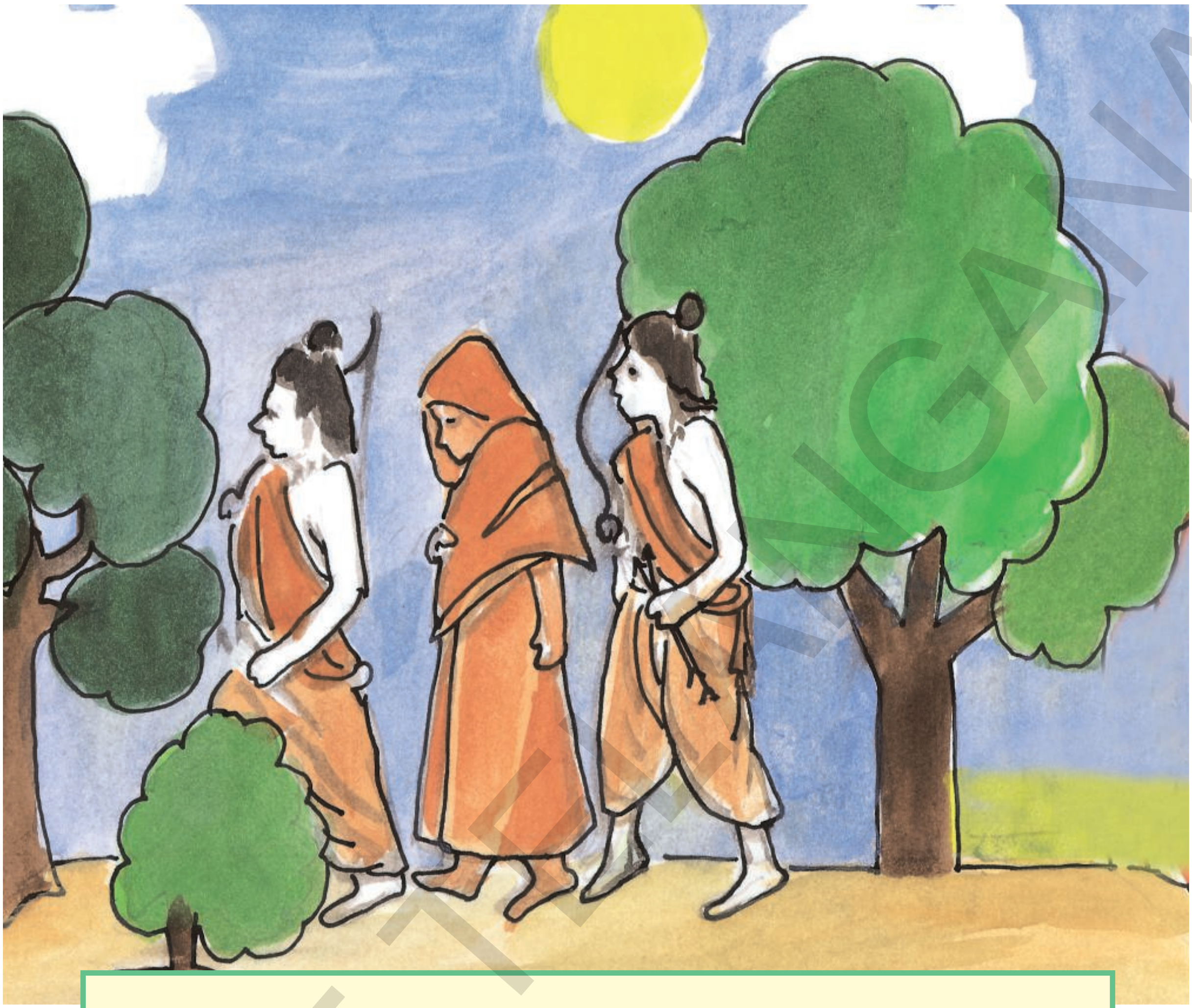

सवैया

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं, "चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?"।
सिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।

"जल को गए लक्खनु, हैं लरिका परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े।।"
तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।

❑ *तुलसीदास*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. नगर के बाहर दो पग चलने के बाद सीता की दशा खराब क्यों हो गयी होगी?
2. रामायण के बारे में आप क्या जानते हैं?

पढ़िए

1. 'अब और कितनी दूर चलना है, पर्णकुटी कहाँ बनाइएगा'–किसने किससे पूछा और क्यों?
2. पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

लिखिए

1. राम ने थकी हुई सीता की सहायता क्यों की होगी?
2. दोनों सवैयों के प्रसंगों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

शब्द भंडार

1. निम्न शब्दों के वाक्य प्रयोग कीजिए।

   चारु = कंटक = बयार = लोचन =

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- सवैये रागयुक्त गाइए।

प्रशंसा

- तुलसीदास के अलावा अन्य कवियों की रचनाओं में प्राप्त होने वाले नीतिपरक मूल्यों के उदाहरण दीजिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. लखि - देखकर   धरि - रखकर
   पोंछि - पोंछकर   जानि - जानकर

- ऊपर लिखे शब्दों और उनके अर्थों को ध्यान से देखिए। हिंदी में जिस उद्देश्य के लिए हम क्रिया में 'कर' जोड़ते हैं, उसी के लिए अवधी में क्रिया में ि (इ) को जोड़ा जाता है, जैसे–अवधी में बैठ + ि = बैठि और हिंदी में बैठ + कर = बैठकर। आपकी भाषा या बोली में क्या होता है? अपनी भाषा के ऐसे छह शब्द लिखिए। उन्हें ध्यान से देखिए और कक्षा में बताइए।

2. "मिट्टी का गहरा अंधकार, डूबा है उसमें एक बीज।"
   उसमें एक बीज डूबा है।

- जब हम किसी बात को कविता में कहते हैं तो वाक्य के शब्दों के क्रम में बदलाव आता है, जैसे–"छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े" को गद्य में ऐसे लिखा जा सकता है "छाया में एक घड़ी खड़ा होकर"। उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को गद्य के शब्दक्रम में लिखिए।
  - पुर तें निकसी रघुबीर-बधू,
  - पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
  - बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
  - पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के कविताओं का भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविताओं के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के भाव को नयी विधा में लिखा सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - III बाल–रामायण (उपवाचक)

श्री रामचरित मानस की रचना गोस्वामी तुलसीदास जी ने की है। यह ग्रंथ हिंदी साहित्य का सर्वोत्तम ग्रंथ है। इस ग्रंथ के माध्यम से मनुष्य के उच्च आदर्शों को दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।

रामचरित मानस को सात कांडों में विभाजित किया गया है। इसमें रामचंद्र जी के जीवन का संपूर्ण वर्णन है।

बालकांड - बहुत समय पहले की बात है। एक राज्य था। अयोध्या। वहाँ के राजा थे दशरथ। उनकी तीन रानियाँ थीं– कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। बहुत दिनों तक राजा को संतान प्राप्ति नहीं हुई। राजा अपने कुलगुरु वशिष्ठ मुनि के पास गये। गुरु ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाने का सुझाव दिया। यज्ञ करवाया गया। आगे चलकर राजा के चार पुत्र हुए। कौशल्या से राम, कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सभी राजकुमार आपस में बड़े प्रेम से रहते। माता–पिता, गुरु व बड़ों का आदर करते। उनकी आज्ञा मानते। उनकी सेवा करते। चारों बालक गुरु वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा पाने लगे। यहाँ उन्हें शास्त्र एवं शस्त्र दोनों की शिक्षा दी जाती। सभी बच्चे बड़े होनहार थे। लेकिन राम कुछ अधिक ही थे। उनकी ख्याति बाल्यकाल में ही दूर–दूर तक फैल गयी।

शिक्षा समाप्त हुई ही थी कि विश्वामित्र अयोध्या की सभा में पहुँचे। उन्होंने राजा से कहा–''राजन! राक्षसों का अत्याचार बहुत बढ़ गया है। वे आये दिन उत्पात मचाते हैं। लूटपाट करते हैं। आम लोगों को सताते हैं। उनकी हत्या करते हैं। ऋषियों के पूजा–पाठ में विघ्न डालते हैं। उनका अपमान करते हैं। मानवों को मारकर उनका मांस भक्षण करते हैं। मैंने आपके पुत्र राम की बड़ी ख्याति सुनी है। मैं उन्हें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। ताकि राक्षसों के अत्याचार से लोगों को बचाया जा सके।''

राजा सोच में पड़ गये। वे राम से बहुत प्रेम करते थे। आखिर वे भी एक पिता थे। वे अपने पुत्र को बाल्यकाल में ही मौत के मुँह में कैसे डाल सकते थे। लेकिन वे राजा थे। प्रजा की रक्षा करना उनका कर्त्तव्य था। उन्होंने प्रजा के कल्याण के लिए अपना पुत्रमोह त्यागना उचित समझा। वे राम को मुनि के साथ भेजने के लिए तैयार हो गये। लेकिन साथ में लक्ष्मण ने भी राम के साथ जाने की इच्छा प्रकट की। अतः दोनों राजकुमार मुनि विश्वामित्र के साथ वन चले गये।

यज्ञ आरंभ हुआ। राक्षस विघ्न डालने के लिए पहुँचे। राक्षसों के साथ राम और लक्ष्मण का भयंकर युद्ध हुआ। उन्होंने ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षसों को मार डाला। मारीच को बिना फल वाले बाण से मार कर समुद्र के पार भेज दिया। दोनों ने मिलकर राक्षसों एवं उनकी सेना का संहार कर डाला। ऋषि, मुनि व लोग बड़े प्रसन्न हुए। सबने उनका आभार माना। उन्हें आशीर्वाद दिया।

उसी समय मिथिला के राजा जनक ने धनुषयज्ञ का आयोजन किया। यह एक प्रकार का स्वयंवर था। उनकी एक बड़ी होनहार व सुंदर पुत्री थी–सीता। उसने एक बार अपने घर में रखा हुआ शिव धनुष उठा लिया। इसे उठाना कोई सरल बात न थी। वह बहुत दिनों से वहीं पड़ा था। राजा जनक भी उसे नहीं उठा सकते थे। इसलिए राजा ने घोषणा की– ''जो इस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा देगा; उसी से मैं अपनी पुत्री सीता का विवाह करूँगा।''

SCERT TELANGANA

विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण के साथ इस स्वयंवर में पहुँचे। रास्ते में राम ने गौतम मुनि की पत्नी अहिल्या का उद्धार किया। यज्ञ प्रारंभ हुआ। देश–विदेश से अनेक राजा व राजकुमार वहाँ पधारे थे। कोई धनुष को उठाना तो दूर हिला भी न सका। राजा जनक बड़े दुखी हुए। उन्होंने निराश होकर कहा– ''क्या धरती वीरों से शून्य हो गयी है?''तब विश्वामित्र की आज्ञा पाकर राम आगे बढ़े। धनुष उठाया। सब लोग आश्चर्यचकित रह गये। अभी राम ने धनुष उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाई ही थी कि धनुष टूट गया। बहुत तीव्र ध्वनि हुई। चारों ओर हर्ष छा गया। सीताजी आगे बढ़ीं। उन्होंने राम के गले में वरमाला डाल दी। सब लोगों ने आशीर्वाद दिया। तभी परशुरामजी क्रोधित मुद्रा में वहाँ पधारे। उन्होंने शिवधनुष तोड़ने वाले को युद्ध के लिए ललकारा। राम ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा– ''मुनिवर! आपकी भक्ति धनुष से नहीं, शिव से है। मैंने शिवधनुष तोड़कर उनका अपमान नहीं किया। मेरे मन में भी उनके प्रति श्रद्धा है। शिव को किसी धनुष में सीमित कर देना उचित नहीं है। आप बड़े हैं। आदरणीय हैं। अपना क्रोध त्यागकर हमें आशीर्वाद दीजिए। ताकि हम संसार का कष्ट हर सकें।''

अयोध्याकांड

राम अयोध्या में रहते हुए समाज की भलाई के कार्य करने लगे। लोगों में उनका प्रभाव बढ़ गया। उनकी प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैल गयी। राम दशरथ के सबसे बड़े पुत्र थे। अतः राजा ने उनका राज्याभिषेक करने की सोची। लेकिन भले लोगों का बुरा चाहने वालों की भी कमी नहीं होती। कैकेयी की एक दासी थी–मंथरा। वह कैकेयी के साथ उसके मायके से आयी थी। उसने कैकेयी के मन में लालच भर दिया। उसकी बुद्धि फेर दी। अगले दिन कैकेयी कोपभवन में जाकर लेट गयी। दशरथ उसे मनाने गये। उसने कहा–''पहले आप मुझे दो वरदान देने का वचन दें।'' राजा ने उसे वचन दे दिया। फिर क्या था, कैकेयी ने दो वरदान माँगे–''भरत को राजा बनाया जाये। राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास में भेजा जाये।'' राजा बड़े दुखी हुए। लेकिन वे क्या कर सकते थे? वचन दे चुके थे। राम को वनवास जाना पड़ा। उनके साथ सीता व लक्ष्मण भी वन चले गये। राजा यह आघात नहीं सह सके। ''हे राम! हे राम!''–कहते हुए उनके प्राण निकल गये।

राम के वन जाने से अयोध्या की प्रजा बहुत दुखी हुई। वन जाते समय वे श्रृंगवेरपुर पहुँचे। वहाँ निषादराज गुह ने उनकी बड़ी सेवा की। मार्ग में उन्हें गंगा नदी पार करनी थी। केवट बहुत चतुर था। उसे राम की महिमा मालूम हो गयी थी। वह उनकी सेवा करना चाहता था। उसने बड़े चतुराई से कहा– ''मैं आपको इस प्रकार अपनी नाव में नहीं चढ़ाऊँगा। आपके छूने से तो पत्थर भी नारी बन जाती है। कहीं मेरी काठ की नाव न नारी बन जाये। मेरे पास परिवार को पालने का यही एक सहारा है। अतः नाव में चढ़ाने से पहले मैं आपके पाँव धोऊँगा।'' राम मुस्कराये और अनुमति दे दी। इस प्रकार केवट ने उन्हें गंगा के पार उतारा। वन जाते समय मार्ग में भरद्वाज मुनि व वाल्मीकि ऋषि से मिले। उनके सुझाव पर वे चित्रकूट में निवास करने लगे।

उधर अयोध्या में राजा दशरथ का स्वर्गवास हो गया था। भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल से बुलवाया गया। अयोध्या की घटना सुनकर भरत बड़े दुखी हुए। उन्होंने राजा बनने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। वे राम को वापस लाने समस्त स्नेहीजनों के साथ चित्रकूट पहुँचे। कैकेयी को भी अपने किये पर पश्चाताप हुआ। वे भी भरत के साथ थीं। लेकिन राम तैयार नहीं हुए। उन्होंने कहा– ''रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय पर वचन न जाई।।'' इस प्रकार उन्होंने अपने सुख से अधिक पिता की आज्ञा पालन को महत्व दिया। अंततः भरत ने उनकी पादुका माँग ली। उन्होंने अयोध्या के सिंहासन पर राम की पादुका रख दी। राम का राज्य मानकर वे राजकाज का दायित्व सँभालने लगे। वे स्वयं नंदिग्राम में निवास करने लगे।

SCERT TELANGANA

अरण्यकांड

राम चित्रकूट में रहे। उन्होंने वहाँ के लोगों की भलाई के लिए कार्य किया। वे ऋषियों, मुनियों व आम लोगों से मिलते। उनकी समस्याएँ व सुझाव सुनते। उनके लिए कार्य करते। उनकी ख्याति और फैलने लगी। चित्रकूट में रहते हुए उन्हें सामान्य लोगों, वनों में रहने वाले पिछड़े लोगों से मिलने का मौका मिला। कुछ काल के पश्चात राम ने चित्रकूट से प्रयाण किया। वे अत्रि ऋषि के आश्रम पहुँचे। अत्रि ने राम की स्तुति की। उनकी पत्नी अनसूया ने सीता को पतिव्रत धर्म के मर्म समझाये। राम आगे बढ़े। मार्ग में शरभंग मुनि से भेंट की। शरभंग मुनि तो जैसे राम के दर्शन के लिए ही जीवित थे। उन्होंने राम के दर्शन कर योगाग्नि में प्रवेश किया। राम को स्थान–स्थान पर हड्डियों के ढेर दिखाई पड़े। मुनियों ने बताया कि राक्षसों ने अनेक मुनियों को खा डाला है। ये उन्हीं मुनियों की हड्डियाँ हैं। राम बड़े दुखी हुए। उन्होंने सोचा–''ये लोग यहाँ इतने पीड़ित थे और मैं अयोध्या के राजमहल में बैठा था?'' उन्होंने राक्षसों से संघर्ष करने का निर्णय लिया। राम और आगे बढ़े। पथ में सुतीक्ष्ण, अगस्त्य आदि ऋषियों से स्थिति जानी। उन्होंने दण्डक वन में प्रवेश किया। यहाँ वे जटायु से मिले। राम वहीं पंचवटी में निवास करने लगे। क्योंकि यह क्षेत्र राक्षसों से अधिक पीड़ित था।

पंचवटी में वे आम लोगों से मिलजुलकर उनके विकास के कार्य करने लगे। उन्हें राक्षसों के अत्याचार का विरोध करने के लिए प्रेरित करने लगे। उन्हें युद्ध विद्या भी सिखाने लगे। लक्ष्मण व सीता भी उनके सामाजिक कार्यों में साथ देते। सीता महिलाओं के विकास के कार्य सँभालतीं। इन सभी बातों से राक्षस बहुत क्रोधित होते।

एक दिन रावण की बहन शूर्पणखा ने राम को देखा। उसने उनसे प्रणय निवेदन किया। राम ने कहा– ''मेरे साथ मेरी पत्नी सीता है। तुम मेरे छोटे भाई लक्ष्मण के पास जाओ। वह अकेला है।'' लक्ष्मण ने कहा– ''मैं तो इस समय मेरे भैया का दास हूँ। मैं तुम्हें स्वीकार नहीं कर सकता।'' शूर्पणखा ने सोचा कि दोनों सीता के कारण उसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं। वह अत्यंत क्रोधित हुई। सीता को मारने उनकी ओर दौड़ी। लक्ष्मण ने उसे रोका। उन्होंने इस कार्य के लिए दंडित करते हुए उसकी नाक काट दी। शूर्पणखा खर और दूषण के पास गई। यह घटना बताई। वे बड़े क्रोधित हुए। सेना के साथ लड़ने आये। राम ने खर–दूषण और उसकी सेना का संहार कर डाला।

शूर्पणखा लंकापति रावण की बहन थी। वह रावण के पास पहुँची। रोने लगी। रावण क्रोधित हुआ। उसने सीता की सुंदरता के बारे में सुन रखा था। किन्तु उसने राम की वीरता के बारे में सुना था। इसलिए उसने सीता को छलपूर्वक अपहरण करने की योजना बनायी। उसने अपने मामा मारीच को स्वर्णमृग बना कर भेजा। सीता ने मृग देखा। उन्होंने राम से उस मृग की छाल के लिए हठ किया। राम ने लक्ष्मण को सीता के पास रहने को कहा। स्वयं मृग का शिकार करने निकले। मृग का पीछा करते–करते वे कुछ दूर चले आये। उन्होंने बाण छोड़ा। बाण मृग को लगा। वह चिल्लाया– ''हा! लक्ष्मण।'' राम समझ गये कि धोखा हुआ है।

उधर सीता और लक्ष्मण ने आवाज़ सुनी। वे व्याकुल हो उठे। सीता ने लक्ष्मण को राम के पास जाने का आदेश दिया। लक्ष्मण को शंका थी कि कोई छलावा है। वे सीता को समझाने लगे। लेकिन सीता ने एक न सुनी। विवश होकर लक्ष्मण ने कुटीर के पास एक रेखा खींच दी। सीता को उसके भीतर रहने के लिए कहकर वे राम की तलाश में निकल पड़े।

तभी रावण, सीता के पास ब्राह्मण भिक्षुक बन कर आया। उसने सीता को लक्ष्मण रेखा से बाहर आकर दान देने के लिए कहा। सीता ब्राह्मण भिक्षुक को खाली हाथ नहीं लौटाना चाहती थीं। वे लक्ष्मण रेखा से बाहर निकली। रावण ने उनका हरण कर लिया। जटायु ने सीता को रावण से बचाने के लिए संघर्ष किया। उसने जटायु के पंख काट दिये। वे अधमरा होकर भूमि पर गिर पड़े।

SCERT TELANGANA

सीता को न पा कर राम अत्यन्त दुखी हुए। विलाप करने लगे। उनकी जटायु से भेंट हुई। उन्हें पता चला कि रावण ने सीता का अपहरण किया है। वह सीता को दक्षिण दिशा की ओर ले गया है। इतना बताकर जटायु ने अपने प्राण त्याग दिये। राम ने उनका अन्तिम संस्कार किया। अब वे सीता की तलाश में दक्षिण दिशा की ओर बढ़ चले।

वे सीता की खोज में सघन वन के भीतर आगे बढ़े। रास्ते में राम ने दुर्वासा के शाप के कारण राक्षस बने गन्धर्व कबन्ध का वध करके उसका उद्धार किया और शबरी के आश्रम जा पहुँचे। यहाँ पर उन्होंने शबरी के जूठे बेर खाये। शबरी ने राम के प्रति श्रद्धा से बेर खिलाने आरंभ किये। लेकिन उसे संदेह था कि बेर मीठे हैं या नहीं। वह प्रत्येक बेर थोड़ा सा चख कर परीक्षण करती कि वे मीठे हैं या नहीं। फिर कड़वे बेर फेंक देती और मीठे बेर राम को खाने के लिए दे देती। राम ने उसके जूठे बेर बड़े चाव से खाये। यह घटना राम के साधारण व निर्धन लोगों के प्रति प्रेम को दर्शाती है।

किष्किन्धाकांड

राम सीता को खोजते हुए ऋष्यमूक पर्वत के निकट पहुँचे। उस पर्वत पर सुग्रीव ने अपने भाई बालि के भय से शरण ली थी। उन्हें शंका हुई कि बालि ने इन दोनों वीरों को उन्हें मारने के लिए भेजा है। इसलिए हनुमान को उनके पास भेजा। हनुमान ने राम और सुग्रीव में मित्रता करवा दी। सुग्रीव ने राम को सांत्वना दी। सीता की खोज में सहायता करने का वचन दिया।

राम ने सुग्रीव पर हुए अत्याचार के बारे में सुना। उन्होंने बालि को दंडित करने का निर्णय लिया। राम ने सुग्रीव को संघर्ष के लिए प्रेरित करते हुए बालि का वध किया। बालि ने मरते समय कहा– ''हे राम! यदि तुम मेरे साथ होते तो मैं रावण को मारकर तुम्हारी सीता तुरंत वापस ला देता।'' इसके उत्तर में राम ने बालि से कहा– ''हे बालि! राम अपने लाभ के लिए कभी किसी अत्याचारी की सहायता नहीं ले सकता। तुमने सुग्रीव के साथ जो अत्याचार किये हैं, उनका दंड तो तुम्हें मिलना ही था। सीता को वापस लाकर भी तुम इस दंड से नहीं बच सकते थे।''

बालि के वध के बाद सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाया गया। बालि–पुत्र अंगद युवराज बने। कुछ दिनों के बाद पुनः सीता की खोज आरंभ हुई। सुग्रीव के वानर वीरों को इसका भार सौंपा गया। सीता की खोज में गये वानर उन्हें खोजते–खोजते समुद्र के किनारे पहुँचे। जाम्बवन्त ने हनुमान को समुद्र लांघने के लिये उत्साहित किया।

सुंदरकांड

हनुमान ने लंका की ओर प्रस्थान किया। सुरसा ने हनुमान की परीक्षा ली और उसे योग्य तथा सामर्थ्यवान पाकर आशीर्वाद दिया। मार्ग में हनुमान ने छाया पकड़ने वाली राक्षसी का वध किया और लंकिनी पर प्रहार करके लंका में प्रवेश किया। उनकी भेंट विभीषण से हुई। उनकी सहायता से हनुमान अशोक वाटिका में पहुँचे। उस समय रावण सीता को धमका रहा था। रावण के जाने पर त्रिजटा ने सीता को सान्त्वना दी। एकांत होने पर हनुमान ने सीता से भेंट की। उन्हें राम की मुद्रिका दी। सीता से साहस वचन कहे।

सीता की चूड़ामणि खोज के साक्ष्य के रूप में लेकर वापस चले। तभी उन्हें भूख सताने लगी। उन्होंने अशोक वाटिका से फल खाने आरंभ किये। वाटिका विध्वंस करना आरंभ किया। वाटिका के सुरक्षाकर्मी उन्हें रोकने के लिए दौड़े। हुनमान ने उन्हें ढेर कर दिया। रावण का पुत्र अक्षय कुमार हनुमान को रोकने पहुँचा। हनुमान ने उसका भी वध कर दिया। इसकी सूचना मेघनाथ को दी गयी। मेघनाथ ने हनुमान पर ब्रह्मपाश फेंका। हनुमान ने ब्रह्माजी की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उसे खंडित नहीं किया।

हनुमान को बाँधकर रावण की सभा में प्रस्तुत किया गया। उसने हनुमान से परिचय पूछा। हनुमान ने कहा–

SCERT TELANGANA

''मैं श्रीराम का दूत हूँ।'' रावण को क्रोध आ गया। उसके आदेश पर हनुमान की पूँछ में कपड़े लपेटे गये। पूँछ को तेल में भिगोया गया। उसमें आग लगा दी गयी। हनुमान ने इस अवसर का लाभ उठाया। कूद–कूद कर संपूर्ण लंका में आग लगा दी। आग शरीर तक पहुँचती तब तक उन्होंने समुद्र में छलाँग लगा दी। लंका धू–धू करके जल उठी।

राम सीता की चूड़ामणि देख विह्वल हो उठे। सीता की खोज के लिए सबने हनुमान की प्रशंसा की। बिना देरी के सेना ने लंका की ओर कूच किया। जिस किसी ने भी इस अभियान के बारे में सुना राम के साथ हो लिया। क्योंकि वे लोग भी किसी न किसी तरह से राक्षसों से सताये गये थे। इसप्रकार इस युद्ध ने जन आंदोलन का रूप ले लिया।

सेना समुद्र के किनारे एकत्र हुई। उधर विभीषण ने रावण को समझाया कि राम से बैर न लें इस पर रावण ने विभीषण को अपमानित कर लंका से निकाल दिया। विभीषण राम की शरण में आ गये। राम ने उसे लंका का राजा घोषित कर दिया।

लंकाकांड (युद्धकांड)

लंका तक पहुँचने में सबसे बड़ी बाधा समुद्र था। सुग्रीव की सेना में दो वानर थे– नल और नील। उन्हें शाप था कि यदि वे कोई वस्तु छू लें तो वह वस्तु पानी में नहीं डूबेगी। जाम्बवंत ने यह बात बताई। उनकी सहायता से समुद्र पर पुल बनाया जाने लगा। इस युद्ध में भाग लेने वाले इतने अधिक थे कि रातों रात पुल तैयार कर लिया गया। उधर भोर होते ही लंका के लोगों ने समुद्र तट पर वानर सेना देखी तो हतप्रभ रह गये।

उधर मन्दोदरी ने रावण को राम से बैर न लेने एवं सीता को वापस करने की विनती की। लेकिन वह नहीं माना। वह अपने अहंकार से पीड़ित था। इसीलिए कहा जाता है कि अहंकार में मनुष्य अंधा हो जाता है।

युद्ध आरंभ होने वाला था। लेकिन राम ने पुनः एक बार संधि का प्रस्ताव भेजा। इस बार दूत बनकर अंगद गये। रावण ने उन्हें ही मारना चाहा। अंगद अपनी वीरता और बुद्धि के बल पर उससे बचने में सफल रहे।

शान्ति के सारे प्रयास असफल हो जाने पर युद्ध आरम्भ हो गया। लक्ष्मण और मेघनाद के मध्य घोर युद्ध हुआ। शक्तिबाण के वार से लक्ष्मण मूर्छित हो गये। उनके उपचार के लिए हनुमान सुषेण वैद्य को ले आये। उनके कहने पर हनुमान संजीवनी लेने हिमालय पर्वत पर पहुँचे। वहाँ वे संजीवनी नहीं पहचान पाये। वे संपूर्ण हिमालय पर्वत ही उठाकर ले आये। सुषेण ने संजीवनी उपचार किया। लक्ष्मण स्वस्थ हो गये।

रावण ने युद्ध के लिए कुम्भकर्ण को जगाया। वह रावण का भाई था। उसे खाने और सोने से बहुत प्रेम था। कहा जाता है कि वह छह महीने सोता था। फिर जब तक जगता था खाते ही रहता था। खा–पीकर फिर सो जाता था। उसे जगाने के लिए तरह–तरह के प्रयत्न किये गये। भालों से कोंचा गया। पकवान सुँघाये गये। बड़े प्रयास के बाद वह जगा।

कुंभकर्ण ने रावण को राम की शरण में जाने का सुझाव दिया। लेकिन रावण नहीं माना। अंततः वह अपने भ्रातृधर्म का पालन करते हुए युद्ध भूमि की ओर चल पड़ा। वह बहुत बहादुरी से लड़ा। अंततः राम के हाथों उसका वध हो गया। लक्ष्मण ने मेघनाद से युद्ध करके उसका वध कर दिया। अब केवल रावण बचा था। राम और रावण के मध्य घोर यद्ध हुआ। अन्त में रावण राम के हाथों मारा गया। राम ने विभीषण को लंका का राज्य सौंपा। सीता और लक्ष्मण के साथ पुष्पक विमान पर चढ़ कर वे अयोध्या की ओर लौट पड़े।

जिस दिन रावण का वध हुआ था उस दिन से प्रति वर्ष दशहरा मनाते हैं। यह त्यौहार अन्याय पर न्याय की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

उत्तरकाण्ड

SCERT TELANGANA

राम, सीता और लक्ष्मण अयोध्या पहुँचे। अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया। इस लिए प्रति वर्ष इस दिन दीपावली मनाई जाती है। तत्पश्चात राम का राज्याभिषेक हुआ। आज भी रामराज्य को आदर्श माना जाता है। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई दुखी नहीं था। किसी के ऊपर अत्याचार नहीं होता था। सर्वत्र समानता एवं निष्पक्षता थी। रामकथा आज भी विश्व में एक आदर्श कथा के रूप में विद्यमान है।

राम एक आदर्श पुत्र हैं। पिता की आज्ञा उनके लिए सर्वोपरि है। पति के रूप में राम ने सदैव एक पत्नीव्रत का पालन किया। राजा के रूप में प्रजा के हित के लिए स्वयं के हित को हेय समझते हैं। विलक्षण व्यक्तित्व है उनका। वे अत्यन्त तेजस्वी, विद्वान, धैर्यशील, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, सुंदर, पराक्रमी, दुष्टों का दमन करने वाले, युद्ध एवं नीतिकुशल, धर्मात्मा, मर्यादापुरुषोत्तम, प्रजावत्सल, शरणागत को शरण देने वाले, सर्वशास्त्रों के ज्ञाता एवं प्रतिभा संपन्न हैं।

सीता का पतिव्रत महान है। सारे वैभव और ऐश्वर्य को ठुकरा कर वे पति के साथ वन चली गईं।

रामायण भातृ–प्रेम का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। जहाँ बड़े भाई के प्रेम के कारण लक्ष्मण उनके साथ वन चले जाते हैं, वहीं भरत अयोध्या की राज गद्दी पर, बड़े भाई का अधिकार होने के कारण, स्वयं न बैठ कर राम की पादुका को प्रतिष्ठित कर देते हैं।

कौशल्या एक आदर्श माता हैं। अपने पुत्र राम पर कैकेयी के द्वारा किये गये अन्याय को भुला कर वे कैकेयी के पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती हैं जितनी कि अपने पुत्र राम पर।

हनुमान एक आदर्श भक्त हैं, वे राम की सेवा के लिये अनुचर के समान सदैव तत्पर रहते हैं। शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण को उनकी सेवा के कारण ही प्राणदान प्राप्त होता है।

रावण के चरित्र से सीख मिलती है कि अहंकार नाश का कारण होता है। रामायण के चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

प्रश्न

1."रामायण आज भी अच्छी नीतियों की सीख देने वाला सुंदर ग्रंथ है।"- सिद्ध कीजिए।

2.रामायण में सभी पात्र अपने–अपने धर्म का पालन करते हुए दिखायी देते हैं–उदाहरण के साथ सिद्ध कीजिए

3. रामायण की कोई एक घटना के बारे में लिखिए।

4. तुलसीदास जी के बारे में जानकारी इकट्ठी कीजिए।

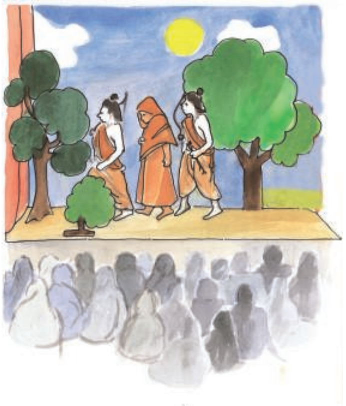

SCERT TELANGANA

इकाई - III

9. नादान दोस्त

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. बच्चा अपने मित्र को क्या खिला रहा है?
3. आप अपने मित्र को क्या खिलाना चाहेंगे? क्यों?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते। सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते। उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मज़ा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी। दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? क्या खाते होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं। न अम्माँ को घर के काम-धंधों से फ़ुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे।

श्यामा कहती–क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र-से उड़ जाएँगे?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता–नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे?

श्यामा–बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था।

इस तरह तीन-चार दिन गुज़र गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-दिन बढ़ती जाती थी। अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब ज़रूर बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे! गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे।

इस मुसीबत का अंदाज़ा करके दोनों घबरा उठे। दोनों ने फ़ैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए। श्यामा खुश होकर बोली–तब तो चिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न?

केशव–नहीं, तब क्यों जाएँगी?

श्यामा–क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी?

केशव का ध्यान इस तकलीफ़ की तरफ़ न गया था। बोला–ज़रूर तकलीफ़ हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे। ऊपर छाया भी तो कोई नहीं।

SCERT TELANGANA

केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ़ करके उसमें पानी भरा।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला—जाकर कूड़ा फेंकनेवाली टोकरी उठा लाओ। अम्माँ जी को मत दिखाना।

श्यामा—वह तो बीच से फटी हुई है। उसमें से धूप न जाएगी?

केशव ने झुँझलाकर कहा—तू टोकरी तो ला, मैं उसका सूराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सूराख में थोड़ा-सा कागज़ ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला—देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा। तब कैसे धूप जाएगी?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं!

2

गरमी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं। लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके, आँखें बंद किए, मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्माँ जी अच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की हिफ़ाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस पड़ती थी यह उसी का दिल जानता था। दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता—अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा। मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था। बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

SCERT TELANGANA

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा–कै बच्चे हैं भइया?

केशव–तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।

श्यामा–ज़रा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं?

केशव–दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा–हमको भी दिखा दो भइया।

केशव–दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी तो दे दो, ऊपर छाया कर दूँ।

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली–अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ।

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा–जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा–अब हमको भी चढ़ा दो भइया।

केशव–तू गिर पड़ेगी।

श्यामा–न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना।

केशव–न भइया, कहीं तू गिर-गिरा पड़ी तो अम्माँ जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे।

दोनों चिड़ियाँ बार-बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा–तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्माँ जी से कह दूँगी।

केशव–अम्माँ जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।

श्यामा–तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं?

केशव–और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते!

श्यामा–हो जाते, हो जाते। देख लेना मैं कह दूँगी!

इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना? किसने किवाड़ खोला?

SCERT TELANGANA

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही। उसे डर लगा कि भइया पिट जाएँगे। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ़ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फ़ैसला नहीं किया जा सकता।

शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगी। अभी सिर्फ़ दो बजे थे। बाहर तेज़ लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी।

3

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ़ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली—भइया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ़ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से ज़मीन की तरफ़ देखने लगा।

श्यामा ने पूछा—बच्चे कहाँ उड़ गए भइया?

केशव ने करुण स्वर में कहा—अंडे तो फूट गए।

श्यामा—और बच्चे कहाँ गए?

केशव—तेरे सर में। देखती नहीं है अंडों में से उजला-उजला पानी निकल आया है। वही तो दो-चार दिनों में बच्चे बन जाते।

माँ ने सोटी हाथ में लिए हुए पूछा—तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो?

SCERT TELANGANA

श्यामा ने कहा– अम्माँ जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं– तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।

अब तो श्यामा को भइया पर ज़रा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े। इसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी।

माँ ने केशव से पूछा–क्यों रे?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ–तू वहाँ पहुँचा कैसे?

श्यामा–चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्माँ जी।

केशव–तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी?

श्यामा–तुम्हीं ने तो कहा था।

माँ–तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा–तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्माँ जी?

माँ–और क्या करती! केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने!

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला–मैंने तो सिर्फ़ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्माँ जी!

माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की हिफ़ाज़त करने के जोग में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद कर वह कभी-कभी रो पड़ता था।

दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं।

सुनिए–बोलिए

1. आपके घर के आसपास कौन–कौन–से पशु–पक्षी दिखायी देते हैं?
2. पक्षी कहाँ रहते हैं? सोचकर बताइए।

पढ़िए

1. अंडों के बारे में केशव और श्यामा के मन में किस प्रकार के सवाल उठते थे?
2. केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना–पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे?
3. माँ ने केशव की नादानी पर क्या कहा?
4. पाठ पढ़कर मालूम कीजिए कि दोनो चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों नहीं दिखायी दीं? वे कहाँ गयी होंगी?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. केशव और श्यामा के स्थान पर आप होते चिड़िया के अंड़ों के लिए क्या करते?
2. केशव और श्यामा ने अंडों की रक्षा की या नादानी?
3. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम नादान दोस्त क्यों रखा? आप इसे क्या शीर्षक देना चाहेंगे और क्यों?

शब्द भंडार

1. चिड़िया अपना घोसला कहाँ–कहाँ बनाती है?

   जैसे– पेड़ ...., ..., ...

2. अंडों की हिफ़ाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. कहानी में कौन–कौन से पात्र हैं? नाटकीकरण की सहायता से कक्षा में अभिनय कीजिए।

प्रशंसा

1. पाठ में बताया गया है कि बच्चों ने चिड़िया के अंडों की सुरक्षा करने की घटना में नादानी से अंडे तोड़ दिये। अब आप बताइए कि पक्षियों की सहायता हम कैसे कर सकते हैं?

भाषा की बात

1. श्यामा माँ से बोली, '**मैंने आपकी** बातचीत सुन ली है।'

ऊपर दिए उदाहरण में मैंने का प्रयोग 'श्यामा' के लिए और **आपकी** का प्रयोग 'माँ' के लिए हो रहा है। जब सर्वनाम का प्रयोग कहने वाले, सुननेवाले या किसी तीसरे के लिए हो, तो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों में तीनों प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनामों के नीचे रेखा खींचिए–

♦ एक दिन दीपू और नीलू यमुना तट पर बैठे शाम की ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक लंबा आदमी लड़खड़ाता हुआ उनकी ओर चला आ रहा है। पास आकर उसने बड़े

SCERT TELANGANA

दयनीय स्वर में कहा, 'मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। क्या आप मुझे कुछ खाने को दे सकते हैं?'

2. तगड़े बच्चे मसालेदार सब्ज़ी बड़ा अंडा

♦ यहाँ रेखांकित शब्द क्रमशः बच्चे, सब्ज़ी और अंडे की विशेषता यानी गुण बता रहे हैं, इसलिए ऐसे विशेषणों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। इसमें व्यक्ति या वस्तु के अच्छे–बुरे हर तरह के गुण आते हैं। तुम चार गुणवाचक विशेषण लिखिए और उनसे वाक्य बनाइए।

3. (क) केशव ने **झुँझलाकर** कहा...

(ख) केशव रोनी सूरत **बनाकर** बोला...

(ग) केशव घ**बराकर** उठा...

(घ) केशव ने टोकरी को एक टहनी से **टिकाकर** कहा...

(ङ) श्यामा ने **गिड़गिड़ाकर** कहा...

♦ ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए। ये शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं, क्योंकि ये बताते हैं कि कहने, बोलने और उठने की क्रिया कैसे क्रिया हुई। 'कर' वाले शब्दों के क्रिया विशेषण होने की एक पहचान यह भी है कि ये अक्सर क्रिया से ठीक पहले आते हैं। अब आप भी इन पाँच क्रिया विशेषणों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

4. नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' का एक अंश दिया गया है। आप उसे पढ़ेंगे तो पायेंगे कि विराम चिह्नों के बिना यह अंश अधूरा–सा है। आवश्यकता के अनुसार उचित जगहों पर विराम चिह्न लगाइए –

♦ उसी समय एक खोमचेवाला जाता दिखाई दिया 11 बज चुके थे चारों तरफ सन्नाटा छा गया था पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाला खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न–जल छोड़ना साधुओं का काम है हमारा आपका नहीं मोटेराम अब क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है।

परियोजना कार्य

गरमियों या सरदियों में जब आपकी लंबी छुट्टियाँ होती हैं, तो आपका दिन कैसे बीतता है? अपनी बुआ या किसी और को एक पोस्टकार्ड या अंतरदेशीय पत्र लिखकर बताइए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के पात्रों के आधार पर नाटकीकरण कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - III

10. लोकगीत

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस नृत्य के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. नृत्य करते समय औरतें कौन–सा गीत गा रही होंगी?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं। सदा से ये गाए जाते रहे हैं और इनके रचनेवाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दकन, छोटा नागपुर में गोंड-खांड, ओराँव-मुंडा, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन नियमों की जकड़ में बँध न सका और निर्द्वंद्व लहराता है। इनके गीत और नाच अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाए और नाचे जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं।

पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूरबी और बिहार के पश्चिमी ज़िलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

SCERT TELANGANA

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणत: पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाए जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में करीब तीस-चालीस बरसों से 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के ज़िलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाए जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक-दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाए जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाए जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। हैं तो ये गीत भी लोकगीत ही, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे मर्द रचने वालों या गाने वालों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषत: स्त्रियों से है। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत मर्दों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं बड़े प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणत: अकेले नहीं गाए जाते, दल बाँधकर गाए जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों

SCERT TELANGANA

और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाए जाते हैं। पर सारे देश के–कश्मीर से कन्या कुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात-राजस्थान से उड़ीसा-आंध्र तक– अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच-गान साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में रसिया चलता है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।

❑ *भगवतशरण उपाध्याय*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. 'बतुकम्मा–बतुकम्मा ऊयालो बंगारू बतुकम्मा ऊयालो'–यह किस प्रकार का गीत है?
2. रोते हुए नन्हें शिशु को चुप कराने के लिए माँ क्या करती है?
3. क्या लोकगीत और नृत्य सिर्फ गाँवों या कबीलों में ही गाये जाते हैं? शहरों में कौन से लोकगीत हो सकते हैं?

पढ़िए

1. पाठ में दिये गये लोकगीतों के नाम और उनसे संबंधित स्थानों की एक सूची तैयार कीजिए।

लिखिए

1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है? बिंदुओं के रूप में उन्हें लिखिए।
2. 'पर सारे, देश .... अपने विद्यापति हैं' इस वाक्य का क्या अर्थ है? **अपने शब्दों में लिखिए।**
3. जैसे–जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या असर पड़ रहा है? आसपास के लोगों से बातचीत करके अपने अनुभव लिखिए।

शब्द भंडार

■ लोकगीत किनकी सहायता से गाये जाते हैं?
जैसे– ढोलक, ..., ..., ...
..........................., ..., ...

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ अपने आसपास के क्षेत्र का कोई लोकगीत इकट्ठा कीजिए। अपनी कक्षा में गाकर सुनाइए।

प्रशंसा

■ 'जीवन जहाँ इठला–इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।' क्या आप इस बात से सहमत हैं? 'बिदेसिया' नामक लोकगीत से कोई कैसे आनंद प्राप्त कर सकता है और वे कौन लोग हो सकते हैं जो इसे गाते– सुनते हैं? इसके बारे में जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सबको बताइए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. 'लोक' शब्द में कुछ जोड़कर जितने शब्द आपको सूझे, उनकी सूची बनाइए। इन शब्दों को ध्यान से देखिए और समझिए कि इनमें अर्थ की दृष्टि से क्या समानता है। इन शब्दों से वाक्य भी बनाइए, जैसे– लोककला।

2. बारहमासा गीत में साल के बारह महीनों का वर्णन होता है। नीचे विभिन्न अंकों से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और अनुमान लगाइए कि इनका क्या अर्थ है और वह अर्थ क्यों है? इस सूची में आप अपने मन से सोचकर भी कुछ शब्द जोड़ सकते हो–

इकतारा	सरपंच	चारपाई	सप्तर्षि	अठन्नी
तिराहा	दोपहर	छमाही	नवरात्रि	चौराहा

3. को, में, से आदि वाक्य में संज्ञा का दूसरे शब्दों के साथ संबंध दर्शाते हैं। 'झाँसी की रानी' पाठ में तुमने का, के बारे में जाना। नीचे 'मंजरी जोशी' की पुस्तक 'भारतीय संगीत की परंपरा' से भारत के एक लोकवाद्य का वर्णन दिया गया है। इसे पढ़िए और रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखिए–

तुरही भारत के कई प्रांतों में प्रचलित है। यह दिखने .... अंग्रेज़ी के एस या सी अक्षर .... तरह होती है। भारत ...... विभिन्न प्रांतों में पीतल या काँसे ..... बना यह वाद्य अलग-अलग नामों ...... जाना जाता है। धातु की नली ...... घुमाकर एस ..... आकार इस तरह दिया जाता है कि उसका एक सिरा संकरा रहे और दूसरा सिरा घंटीनुमा चौड़ा रहे। फूँक मारने .... एक छोटी नली अलग .... जोड़ी जाती है। राजस्थान .... इसे बर्गू कहते हैं। उत्तर प्रदेश ..... यह तूरी, मध्य प्रदेश और गुजरात .... रणसिंघा और हिमाचल प्रदेश .... नरसिंघा ..... नाम से जानी जाती है। राजस्थान और गुजरात में इसे काकड़सिंघी भी कहते हैं।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (√)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. लोकगीतों इकट्ठाकर गा सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - III

11. टिकट अलबम

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. आपने डाक टिकटों पर कौन–कौन–से चित्र देखे हैं?
3. आप किन चीज़ों का संकलन करना चाहेंगे?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

अब राजप्पा को कोई नहीं पूछता। आजकल सब-के-सब नागराजन को घेरे रहते। 'नागराजन घमंडी हो गया है', राजप्पा सारे लड़कों में कहता फिरता। पर लड़के भला कहाँ उसकी बातों पर ध्यान देते! नागराजन के मामा जी ने सिंगापुर से एक अलबम भिजवाया था। वह लड़कों को दिखाया करता। सुबह पहली घंटी के बजने तक सभी लड़के नागराजन को घेरकर अलबम देखा करते। आधी छुट्टी के वक्त भी उसके आसपास लड़कों का जमघट लगा रहता। कई लोग टोलियों में उसके घर तक हो आए। नागराजन शांतिपूर्वक सभी को अपना अलबम दिखाता, पर किसी को हाथ नहीं लगाने देता। अलबम को गोद में रख लेता और एक-एक पन्ना पलटता, लड़के बस देखकर खुश होते।

और तो और कक्षा की लड़कियाँ भी उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं। पार्वती

लड़कियों की अगुवा बनी और अलबम माँगने आई। लड़कियों में वही तेज़-तर्रार मानी जाती थी। नागराजन ने कवर चढ़ाकर अलबम उसे दिया। शाम तक लड़कियाँ अलबम देखती रहीं फिर उसे वापस कर दिया।

अब राजप्पा के अलबम को कोई पूछने वाला नहीं था। वाकई उसकी शान अब घट गई थी। राजप्पा के अलबम की, लड़कों में काफ़ी तारीफ़ रही थी। मधुमक्खी की तरह उसने एक-एक करके टिकट जमा किए थे। उसे तो बस एक यही धुन सवार थी। सुबह आठ बजे वह घर से निकल पड़ता। टिकट जमा करने वाले सारे लड़कों के चक्कर लगाता। दो ऑस्ट्रेलिया के टिकटों के बदले एक फिनलैंड का टिकट लेता। दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का। बस शाम, जैसे ही घर लौटता, बस्ता कोने में पटककर अम्मा से चबेना लेकर निकर की जेब में भर लेता और खड़े-खड़े कॉफ़ी पीकर निकल जाता। चार मील दूर अपने दोस्त के घर से कनाडा का टिकट लेने पगडंडियों में होकर भागता।

SCERT TELANGANA

स्कूल भर में उसका अलबम सबसे बड़ा था। सरपंच के लड़के ने उसके अलबम को पच्चीस रुपए में खरीदना चाहा था, पर राजप्पा नहीं माना। 'घमंडी कहीं का', राजप्पा बड़बड़ाया था। फिर उसने तीखा जवाब दिया था, "तुम्हारे घर में जो प्यारी बच्ची है न, उसे दे दो न तीस रुपए में।" सारे लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े थे।

पर अब? कोई उसके अलबम की बात तक नहीं करता। और तो और अब सब उसके अलबम की तुलना नागराजन के अलबम से करने लगे हैं। सब कहते हैं राजप्पा का अलबम फिसड्डी है।

पर राजप्पा ने नागराजन के अलबम को देखने की इच्छा कभी नहीं प्रकट की। लेकिन जब दूसरे

लड़के उसे देख रहे होते तो वह नीची आँखों से देख लेता। सचमुच नागराजन का अलबम बेहद प्यारा था। पर राजप्पा के पास जितने टिकट थे उतने नागराजन के अलबम में नहीं थे। पर खुद उसका अलबम ही कितना प्यारा था। उसे छू लेना ही कोई बड़ी बात थी। इस तरह का अलबम यहाँ थोड़ी मिलेगा। अलबम के पहले पृष्ठ पर मोती जैसे अक्षरों में उसके मामा ने लिख भेजा था–

ए. एम. नागराजन

'इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा।'

लड़कों ने इसे अपने अलबम में उतार लिया। लड़कियों ने झट कापियों और किताबों में टीप लिया।

"तुम लोग यह नकल क्यों करते हो? नकलची कहीं के", राजप्पा ने लड़कों को घुड़की दी। सब चुप रहे पर कृष्णन से नहीं रहा गया।

"जा, जा। जलता है, ईर्ष्यालु कहीं का।"

"मैं काहे को जलूँ? जले तेरा खानदान। मेरा अलबम उसके अलबम से कहीं बड़ा है।" राजप्पा ने शान बघारी।"

अरे, उसके पास जो टिकटें हैं, वह हैं कहीं तेरे पास? सब क्यों? बस एक इंडोनेशिया का टिकट दिखा दो। अरे, पानी भरोगे, हाँ।" कृष्णन ने छेड़ा।

"पर मेरे पास जो टिकट है, वह कहाँ है उसके पास?" राजप्पा ने फिर ललकारा।

"उसके पास जो टिकट है वही दिखा दो।" कृष्णन भी कम नहीं था।

"ठीक है, दस रुपए की शर्त। मेरे वाले टिकट दिखा दो।"

"तुम्हारा अलबम कूड़ा है।" कृष्णन चीखा, "हाँ, हाँ कूड़ा।"

लड़के जैसे कोरस गाने लगे।

राजप्पा को लगा, अपने अलबम के बारे में बातें करना फ़ालतू है। उसने कितनी मेहनत और लगन से टिकट बटोरे हैं। सिंगापुर से आए इस एक पार्सल ने नागराजन को एक ही दिन में मशहूर कर दिया। पर दोनों में कितना अंतर है! ये लड़के क्या समझेंगे!

राजप्पा मन-ही-मन कुढ़ रहा था। स्कूल जाना अब खलने लगा था और लड़कों के सामने जाने में शर्म आने लगी। आमतौर पर शनिवार और रविवार को टिकट की खोज में लगा रहता, परंतु अब घर-घुसा हो गया था। दिन में कई बार अलबम को पलटता रहता। रात को लेट जाता। सहसा जाने क्या सोचकर उठता, ट्रंक खोलकर अलबम निकालता और एक बार पूरा देख जाता। उसे अलबम से चिढ़ होने लगी थी। उसे लगा, अलबम वाकई कूड़ा हो गया है।

उस दिन शाम उसने जैसे तय कर लिया था, वह नागराजन के घर गया। अब कोई कितना अपमान सहे! नागराजन के हाथ अचानक एक अलबम लगा है, बस यही ना। वह क्या जाने टिकट कैसे जमा किए जाते हैं! एक-एक टिकट की क्या कीमत होती है, वह भला क्या समझे! सोचता होगा टिकट जितना बड़ा होगा, वह उतना ही कीमती होगा। या फिर सोचता होगा, बड़े देश का टिकट कीमती होगा। वह भला क्या समझे!

उसके पास जितने भी फ़ालतू टिकट हैं उन्हें टरका कर, उससे अच्छे टिकट झाड़ लेगा। कितनों को तो उसने यूँ ही उल्लू बनाया है। कितनी चालबाज़ी करनी पड़ती है। नागराजन भला किस खेत की मूली है?

राजप्पा नागराजन के घर पहुँचकर ऊपर गया। चूँकि वह अकसर आया-जाया करता था, सो किसी ने नहीं टोका। ऊपर पहुँचकर वह नागराजन की मेज़ के पास पड़ी कुरसी पर बैठ गया। कुछ देर बाद नागराजन की बहन कामाक्षी ऊपर आई।

"भैया शहर गया है। अरे हाँ, तुमने भैया का अलबम देखा?" उसने पूछा।

"हूँ", राजप्पा को हाँ कहने में हेकड़ी हो रही थी।

SCERT TELANGANA

"बहुत सुंदर अलबम है ना? सुना है स्कूल भर में किसी के भी पास इतना बड़ा अलबम नहीं है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"भैया ने।"

वह कुढ़ गया।

"बड़े से क्या मतलब हुआ? आकार में बड़ा हुआ तो अलबम बड़ा हो गया?" उसकी चिड़चिड़ाहट साफ़ थी।

कामाक्षी कुछ देर तक वहीं रही। फिर नीचे चली गई। राजप्पा मेज़ पर बिखरी किताबों को टटोलने लगा। अचानक उसका हाथ दराज़ के ताले से टकरा गया। उसने ताले को खींचकर देखा। बंद था, क्यों न उसे खोलकर देख लिया जाए। मेज़ पर से उसने चाबी ढूँढ़ निकाली।

सीढ़ियों के पास जाकर उसने एक बार झाँककर देखा। फिर जल्दी में दराज़ खोली। अलबम ऊपर ही रखा हुआ था। पहला पृष्ठ खोला। उन वाक्यों को उसने दोबारा पढ़ा। उसका दिल तेज़ी से ध ड़कने लगा। अलबम को झट कमीज़ के नीचे खोंस लिया और दराज़ बंद कर दिया। सीढ़ियाँ उतरकर घर की ओर भागा।

घर जाकर सीधा पुस्तक की अलमारी के पास गया और पीछे की ओर अलबम छिपा दिया। उसने बाहर आकर झाँका। पूरा शरीर जैसे जलने लगा था। गला सूख रहा था और चेहरा तमतमाने लगा था।

रात आठ बजे अपू आया। हाथ-पाँव हिलाकर उसने पूरी बात कह सुनाई।

"सुना तुमने, नागराजन का अलबम खो गया। हम दोनों शहर गए हुए थे। लौटकर देखा तो अलबम गायब!"

राजप्पा चुप रहा। उसने अपू को किसी तरह टाला। उसके जाते ही उसने झट कमरे का दरवाज़ा भेड़ लिया और अलमारी के पीछे से अलबम निकालकर देखा। उसे फिर छिपा दिया। डर था कहीं कोई देख न ले।

रात में खाना नहीं खाया। पेट जैसे भरा हुआ था। सारा घर चिंतित हो गया। उसका चेहरा भयानक हो गया था।

रात, उसने सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। अलबम सिरहाने तकिए के नीचे रखकर सो गया।

सुबह अपू दोबारा आया। राजप्पा तब भी बिस्तर पर बैठा था। अपू सुबह नागराजन के घर होकर आया था। "कल तुम उसके घर गए थे?" अपू ने पूछा।

राजप्पा की साँस जैसे ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। फिर सिर हिला दिया। वह जिस तरह चाहे सोच ले।

"कामाक्षी ने कहा था कि हमारे जाने के बाद खाली तुम वहाँ आए थे।" अपू बोला। राजप्पा को समझते देर नहीं लगी कि अब सब उस पर शक करने लगे हैं।

SCERT TELANGANA

"कल रात से नागराजन लगातार रोए जा रहा है। उसके पापा शायद पुलिस को खबर दें।" अपू ने फिर कहा।

राजप्पा फिर भी चुप रहा।

"उसके पापा डी.एस.पी. के दफ़्तर में ही तो काम करते हैं। बस वह पलक झपक दें और पुलिस की फ़ौज हाज़िर।" अपू जैसे आग में घी डाल रहा था।

यह तो भला हुआ कि अपू का भाई उसे ढूँढ़ता हुआ आ गया और अपू चलता बना।

राजप्पा के पापा दफ़्तर चले गए थे। बाहर का किवाड़ बंद था। राजप्पा अभी तक बिस्तर पर बैठा हुआ था। आधा घंटा गुज़र गया और वह उसी तरह बैठा रहा।

तभी बाहर की साँकल खटकी।

'पुलिस', राजप्पा बुदबुदाया।

भीतर साँकल लगी थी। दरवाज़ा खटकने की आवाज़ तेज़ हो गई। राजप्पा ने तकिए के नीचे से अलबम उठाया और ऊपर भागा। अलमारी के पीछे छिपा दे? नहीं। पुलिस ने अगर तलाशी ली तो पकड़ा जाएगा। अलबम को कमीज़ के नीचे छिपाकर वह नीचे आ गया। बाहर का दरवाज़ा अब भी बज रहा था।

"कौन है? अरे दरवाज़ा क्यों नहीं खोलता?" अम्मा भीतर से चिल्लाईं। थोड़ी देर और हुई तो अम्मा खुद ही उठकर चली आएँगी।

राजप्पा पिछवाड़े की ओर भागा। जल्दी से बाथरूम में घुसकर दरवाज़ा बंद कर लिया।

अम्मा ने अँगीठी पर गरम पानी की देगची चढ़ा रखी थी। उसने अलबम को अँगीठी में डाल दिया। अलबम जलने लगा। कितने प्यारे टिकट थे। राजप्पा की आँखों में आँसू आ गए।

तभी अम्मा की आवाज़ आई, "जल्दी से आ तो नहाकर। नागराजन तुझे ढूँढ़ता हुआ आया है।" राजप्पा ने निकर उतार दी और गीला तौलिया लपेटकर बाहर आ गया। कपड़े बदलकर वह ऊपर गया। नागराजन कुरसी पर बैठा हुआ था। उसे देखते ही बोला, "मेरा अलबम खो गया है यार।" उसका चेहरा उतरा हुआ था। काफ़ी रोकर आया था शायद।

"कहाँ रखा था तुमने?" राजप्पा ने पूछा।

"शायद दराज़ में। शहर से लौटा तो गायब।"

नागराजन की आँखों में आँसू आ गए। राजप्पा से चेहरा बचाकर उसने आँखें पोंछ लीं।

"रो मत यार।" राजप्पा ने उसे पुचकारा। वह फफक-फफक कर रो दिया।

राजप्पा झट नीचे उतरकर गया। एक मिनट में वह ऊपर नागराजन के सामने था। उसके हाथ में उसका अपना अलबम था।

"लो यह रहा मेरा अलबम। अब इसे तुम रख लो। ऐसे क्यों देख रहे हो। मज़ाक नहीं कर रहा। सच कहता हूँ, इसे अब तुम रख लो।"

"बहला रहे हो यार।" नागराजन को जैसे यकीन नहीं आया।

"नहीं यार। सचमुच तुमको दे रहा हूँ। रख लो।"

SCERT TELANGANA

राजप्पा भला अपना अलबम उसे दे दे! कैसा चमत्कार है! नागराजन को अब भी यकीन नहीं आ रहा था। पर राजप्पा अपनी बात बार-बार दोहरा रहा था। उसका गला भर आया था।

"ठीक है, मैं इसे रख लेता हूँ। पर तुम क्या करोगे?"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"क्यों, तुम्हें एक भी टिकट नहीं चाहिए?"

"नहीं।"

"पर तुम कैसे रहोगे बगैर किसी टिकट के?"

"रोता क्यों है यार!"

"ले, इस अलबम को तू ही रख ले। इतनी मेहनत की है तूने।" नागराजन बोला।

"नहीं, तुम रख लो। लेकर चले जाओ। जाओ, चले जाओ यहाँ से।" वह चीखा और फूट-फूटकर रो दिया।

नागराजन की समझ में कुछ नहीं आया। वह अलबम लेकर नीचे उतर गया।

कमीज़ से आँखें पोंछता हुआ राजप्पा भी नीचे उतर आया। दोनों साथ-साथ दरवाज़े तक आए।

"बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं घर चलूँ?" नागराजन सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"सुनो राजू", राजप्पा ने पुकारा। नागराजन ने उसे पलटकर देखा। "अलबम दे दो। मैं आज रात जी भरकर इसे देखना चाहता हूँ। कल सुबह तुम्हें दे जाऊँगा।"

"ठीक है।" नागराजन ने उसे अलबम लौटा दी और चला गया।

राजप्पा ऊपर आया। उसने दरवाज़ा बंद कर लिया और अलबम को छाती से लगाकर फूट-फूटकर रो दिया।

❑ सुंदरा रामस्वामी

(तमिल से अनुवाद : सुमति अय्यर)

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. बच्चों को क्या–क्या चीज़ें जमा करने की आदत होती है?
2. **आपको** कौन–सी चीज़ जमा करने की आदत है और क्यों?
3. कई लोग चीज़ें इकट्ठी करते हैं और 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में अपना नाम दर्ज करवाते हैं। इसके पीछे उनकी क्या प्रेरणा होती होगी? **सोचिए** और अपने दोस्तों से इस पर बातचीत कीजिए।

पढ़िए

1. नागराजन ने अलबम के मुख्य पृष्ठ पर क्या लिखा और क्यों? इसका असर कक्षा के दूसरे लड़के–लड़कियों पर क्या हुआ?
2. नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा के मन की क्या दशा हुई?
3. अलबम चुराते समय राजप्पा किस मानसिक स्थिति से गुज़र रहा था?

लिखिए

1. राजप्पा ने अपना अलबम नागराजन को क्यों दिया **होगा**?
2. लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्खी से क्यों की?
3. टिकटों की तरह बच्चे और बड़े दूसरी चीज़ें भी जमा करते हैं। सिक्के उनमें से एक हैं। **आप** कुछ अन्य चीज़ों के बारे में **सोचिए** जिन्हें जमा किया जा सकता है, उनके नाम लिखिए।
4. टिकट–अलबम का शौक रखने के राजप्पा और नागराजन के तरीके में क्या फ़र्क है? **आप** अपने शौक के लिए कौन–सा तरीका अपनाओगे?

शब्द भंडार

1. टिकट कहाँ–कहाँ लिये जाते हैं?
   जैसे–बस, ..., ..., ...
2. अपने अलबम के बारे में बातें करना <u>फ़ालतू</u> है। रेखांकित **शब्द** का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
4. बाहर का किवाड़ बंद था।

SCERT TELANGANA

(क) किवाड़ शब्द का पर्याय जानकर वाक्य लिखिए।
(ख) बाहर, बंद की जगह उनके विपरीतार्थक शब्द लिखकर वाक्य फिर से लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- यदि टिकट अपने बारे में कुछ बता पाते तो क्या बताते? सोचकर टिकट की आत्मकथा लिखिए।

प्रशंसा

- राजप्पा ने नागराजन का टिकट अलबम अँगीठी में डाल दिया। किंतु नागराजन के दुखी होने पर उसने अपना टिकट अलबम दे दिया। इस घटना से पता चलता है कि राजप्पा ने अपनी की हुई गलती को सुधारने का प्रयास किया। राजप्पा की प्रशंसा करते हुए अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को कहानी में ढूँढ़कर उनका अर्थ समझिए। अब स्वयं सोचकर इनसे वाक्य बनाइए–

खोंसना	जमघट	टटोलना	कुढ़ना	ठहाका
अगुआ	पुचकारना	खलना	हेकड़ी	तारीफ

2. कहानी से व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हुए 'नहीं' का अर्थ देनेवाले शब्दों (नकारात्मक विशेषण) को छाँटकर लिखिए। उनका उलटा अर्थ देने वाले शब्द भी लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर टिकट की आत्मकथा लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

12. वह चिड़िया जो

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. चिड़ियाँ आदमी के आसपास क्यों हैं?
3. चिड़ियों का जीवन हमसे किस प्रकार भिन्न है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
दूध-भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
कंठ खोलकर
बूढ़े वन-बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

❑ केदारनाथ अग्रवाल

पाठ के बारे में

कवि ने बताया है कि उसके स्वभाव में नीले पंखोंवाली एक छोटी चिड़िया है। वह संतोषी है, अन्न से बहुत प्यार करती है, वह अपनेपन के साथ कंठ खोलकर पुराने घने वन में बेरोक गाती है, मुँहबोली है, एकांत में भी उमंग से रहती है। वह उफनती नदी के विषय में जानकर भी जल की मोती-सी बूँदों को चोंच में भर लाती है। उसे स्वयं पर गर्व है। वह साहसी है। उसे नदी से लगाव है। कवि ने अपने भीतर की कल्पित चिड़िया के माध्यम से मनुष्य के महत्त्वपूर्ण गुणों को उजागर किया है।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. कुछ पक्षियों के नाम बताइए।
2. आपको चिड़िया क्यों अच्छी लगती है?

पढ़िए

1. इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन–किन चीज़ों से प्यार है?
2. चिड़िया वन–बाबा की खातिर क्या करती है?

लिखिए

1. कविता में चिड़िया को संतोषी क्यों कहा गया है ?
2. 'वह चिड़िया जो' कविता का सारांश लिखिए।

शब्द भंडार

चिड़िया कहां–कहां दिखायी पड़ती है?

जैसे–बगीचा ....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. कविता पढ़कर आपके मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है उस चित्र को कागज़ पर बनाइए। और उसका वर्णन कीजिए।

प्रशंसा

1. पक्षियों से आप क्या सीख सकते हैं? अपने विचार लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. पंखोंवाली चिड़िया — ऊपरवाली दराज़
नीले पंखोंवाली चिड़िया — सबसे ऊपरवाली दराज़

- यहाँ रेखांकित शब्द विशेषण का काम कर रहे हैं। ये शब्द चिड़िया और दराज़ संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं, अतः रेखांकित शब्द विशेषण हैं और चिड़िया, दराज़ विशेष्य हैं। यहाँ 'वाला/वाली' जोड़कर बनने वाले कुछ और विशेषण दिए गए हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों की तरह इनके आगे एक-एक विशेषण और जोड़िए–

....	मोरोंवाला बाग
....	पेड़ोंवाला घर
....	फूलोंवाली क्यारी
....	स्कूलवाला रास्ता
....	हँसनेवाला बच्चा
....	मूँछोंवाला आदमी

2. वह चिड़िया जुंडी के दाने **रुचि से** खा लेती है।
वह चिड़िया **रस उँडेलकर** गा लेती है।

- कविता की इन पंक्तियों में मोटे छापे वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो। पहले वाक्य में 'रुचि से' खाने के ढंग की और दूसरे वाक्य में 'रस उँडेलकर' गाने के ढंग की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये दोनों क्रिया विशेषण हैं। नीचे दिए वाक्यों में कार्य के ढंग या रीति से संबंधित क्रिया विशेषण छाँटिए–

(क) सोनाली जल्दी-जल्दी मुँह में लड्डू ठूँसने लगी।
(ख) गेंद लुढ़कती हुई झाड़ियों में चली गई।
(ग) भूकंप के बाद जनजीवन धीरे-धीरे सामान्य होने लगा।
(घ) कोई सफ़ेद-सी चीज़ धप्प-से आँगन में गिरी।
(ङ) टॉमी फुर्ती से चोर पर झपटा।
(च) तेजिंदर सहमकर कोने में बैठ गया।
(छ) आज अचानक ठंड बढ़ गई है।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के कविताओं का भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविताओं के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से नयी कविता लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

13. ऐसे–ऐसे

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र में कौन–किससे–क्या कह रहा है?
3. बच्चा पाठशाला क्यों नहीं आया होगा? अनुमान लगाइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

पात्र-परिचय

मोहन : एक विद्यार्थी
दीनानाथ : एक पड़ोसी
माँ : मोहन की माँ
पिता : मोहन के पिता
मास्टर : मोहन के मास्टर जी।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन।

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़कवाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फ़ोन रखा है। परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ-नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार-बार पेट को पकड़ता है। उसके माता-पिता पास बैठे हैं।)

माँ : *(पुचकारकर)* न-न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले, तब तक सेंक ले। *(चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है। फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है।)* इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ़ एक केला और एक संतरा खाया था। अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डा पर आकर यकायक बोला – पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा। मैंने कहा – अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला – नहीं। फिर पूछा – चाकू-सा चुभता है? तो जवाब दिया – नहीं। गोला-सा फूटता है? तो बोला – नहीं। जो पूछा उसका जवाब – नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : *(हँसकर)* हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है? कोई नयी बीमारी तो नहीं? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है! हवाइयाँ उड़ रही हैं।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था। खड़ा नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा – मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है।

मोहन : *(ज़ोर से कराहकर)* माँ! ओ माँ!

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ जान पड़ती है। यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देखो न, कैसे लोट रहा है! ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट – सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते!

SCERT TELANGANA

(तभी फ़ोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं।)

पिता : यह 43332 है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ...कौन? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है...जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं...बस यही कह रहा है...बस जी ...नहीं, गिरा भी नहीं. ..'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे!' यह 'ऐसे-ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता। जी...जी हाँ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है। नाचा. ..नाचता फिरता है...जी नहीं, दस्त तो नहीं आया...जी हाँ, पेशाब तो आया था...जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगे...अच्छा जी! ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। *(फ़ोन का चोंगा रख देते हैं।)* डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनट में आ जाते हैं।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।)

मोहन : माँ...माँ...ओ...ओ...*(उलटी आती है। उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है।)* हाय, हाय!

माँ : *(कमर सहलाती हुई)* क्या हो गया? दोपहर को भला-चंगा गया था। कुछ समझ में नहीं आता! कैसा पड़ा है! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बड़ा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा!

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँवे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : *(तेज़ी से कराहकर)* अरे....रे-रे-रे....ओह!

माँ : *(घबराकर)* क्या है, बेटा? क्या हुआ?

मोहन : *(रुआँसा-सा)* बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है। ऐसे-ऐसे।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे? ऐसे क्या होता है?

मोहन : ऐसे-ऐसे। (*पेट दबाता है।*)
(*वैद्य जी का प्रवेश।*)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन? मैंने कहा, जय राम जी की! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या?
(*सब उठकर हाथ जोड़ते हैं। वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।*)

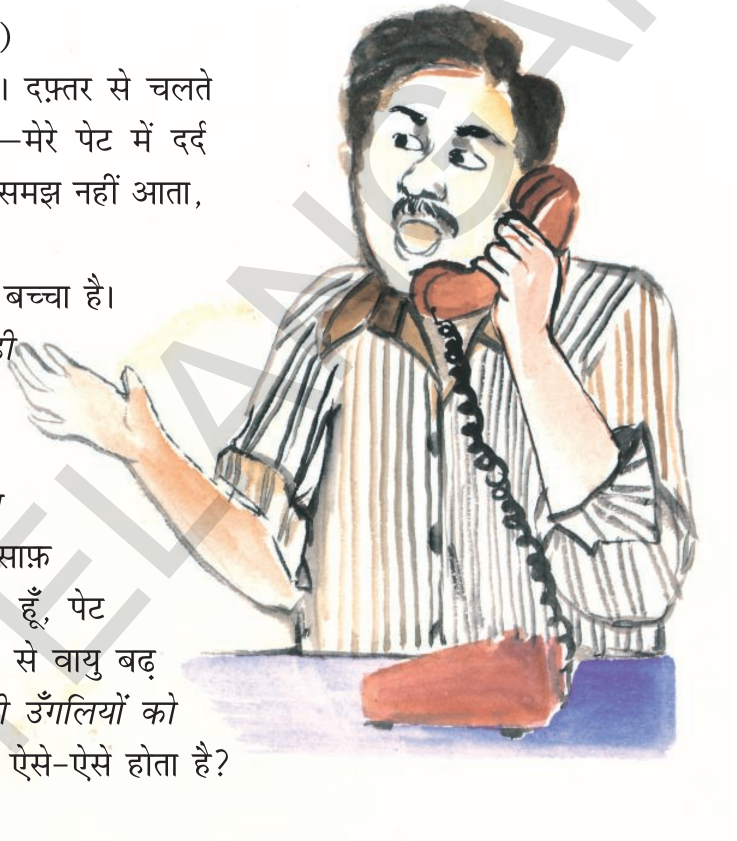

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ़्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला—मेरे पेट में दर्द होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है!

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझा नहीं पाता है। (*नाड़ी दबाकर*) वात का प्रकोप है... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ। (*मोहन जीभ निकालता है।*) कब्ज़ है। पेट साफ़ नहीं हुआ। (*पेट टटोलकर*) हूँ, पेट साफ़ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा? (*हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं।*) ऐसे-ऐसे होता है?

मोहन : (*कराहकर*) जी हाँ...ओह!

वैद्य जी : (*हर्ष से उछलकर*) मैंने कहा न, मैं समझ गया। अभी पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो। (*मोहन की माँ से*) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है। दो-तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग!
(*वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।*)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट। (*नोट देते हैं।*)

वैद्य जी : (*नोट लेते हुए*) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दो हैं?
(*अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं।*)

डॉक्टर : हैलो मोहन! क्या बात है? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया?
(*माँ और पिता जी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है। डॉक्टर पास बैठते हैं।*)

SCERT TELANGANA

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।

डॉक्टर : (*पेट दबाने लगते हैं।*) अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। (*मोहन जीभ निकालता है।*) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है? ऐसे-ऐसे?

(*मोहन बोलता नहीं, कराहता है।*)

माँ : बताओ, बेटा! डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी...जी...ऐसे-ऐसे। कुछ ऐसे-ऐसे होता है। (*हाथ से बताता है। उँगलियाँ भींचता है।*) डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

डॉक्टर : (*सहसा गंभीर होकर*) वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता। (*बराबर पेट टटोलता रहता है।*)

माँ : (*काँपकर*) फोड़ा!

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिलकुल नहीं है। (*मोहन से*) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो। (*मोहन जीभ निकालता है।*) हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहज़मी भी है। (*उठते हुए*) कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। (*पिता से*) क्यों न आप ही चलें! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा डाल लेती है। बस उसी की ऐंठन है।

(*डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।*)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (*दूर से*) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(*डॉक्टर जाते हैं। माँ बोतल उठाती है। पड़ोसिन आती है।*)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन?

माँ : आओ जी, रामू की काकी! कैसा क्या होता! लोचा-लोचा फिरे है। जाने वह 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया। नए-नए बुखार निकल आए हैं। वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है।

(*बाहर से आवाज़ आती है–*'मोहन! मोहन!'*। फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।*)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (*पुकारकर*) आ जाइए!

SCERT TELANGANA

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है! क्यों, भाई? (*पास आकर*) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ। अकसर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है।

माँ : सच! क्या बीमारी है यह?

मास्टर : अभी बताता हूँ। (*मोहन से*) अच्छा साहब! दर्द तो दूर हो ही जाएगा। डरो मत। बेशक कल स्कूल मत आना। पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है?

(*मोहन चुप रहता है।*)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं।

मास्टर : हाँ, बोलो बेटा।

SCERT TELANGANA

(*मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है। फिर इनकार में सिर हिलाता है।*)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ।

मास्टर : हूँ! शायद सवाल रह गए हैं।

मोहन : जी!

मास्टर : तो यह बात है। 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है।

माँ : (*चौंककर*) क्या?

(*मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है।*)

मास्टर : (*हँसकर*) कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा–'ऐसे-ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। (*मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है।*) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

(*मोहन उठता है। माँ ठगी-सी देखती है। दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।*)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। (*पिता से*) देखा जी आपने!

पिता : (*चकित होकर*) क्या-क्या हुआ?

माँ : क्या-क्या होता! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हें!

(*दवा की शीशी हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।*)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह!

पिता : वाह, बेटा जी, वाह! तुमने तो खूब छकाया!

(*एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।*)

❑ *विष्णु प्रभाकर*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. बच्चे स्कूल न जाने के लिए घर पर क्या–क्या बहाने बनाते हैं?
2. स्कूल में पढ़ाये जानेवाले विषयों में आपको कौन–सा विषय अच्छा लगता है? क्यों?

पढ़िए

1. पाठ में दिये गये पात्रों के नाम बताइए।
2. पिता ने डॉक्टर को फोन पर मोहन की स्थिति का क्या विवरण दिया?

लिखिए

1. माँ मोहन के ऐसे–ऐसे कहने पर क्यों घबरा रही थी?
2. ऐसे कौन–कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखिए।

शब्द भंडार

■ इस पाठ में शरीर के अनेक अंगों के नाम आये हैं, उनको छाँटकर लिखिए। पाँच वाक्य बनाइए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ पाठ में मोहन पाठशाला जाने से बचने के लिए कई बहाने बनाता है। ऐसे ही कुछ बहानों के आधार पर एक छोटी सी कहानी बनाइए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

- बहाने बनाना अच्छी बात नहीं है। जो बहाने बनाता है, वह काम से जी चुराने का काम करता है। बहानों से बचने के लिए हमें जीवन में क्या करना चाहिए।

भाषा की बात

1. मोहन ने केला और संतरा खाया। (सकारात्मक)
2. मोहन ने केला और संतरा नहीं खाया। (नकारात्मक)
3. मोहन ने क्या खाया? (प्रश्नवाचक)

ऊपर दिये गये उदाहरण के आधार पर अन्य कुछ वाक्यों को लिखिए। (सकारात्मक, नकारात्मक व प्रश्नवाचक)

- नीचे लिखे वाक्यांशों (वाक्य के हिस्सों) को पढ़िए।

झाँसी की रानी	मिट्‍टी का घरोंदा	प्रेमचंद की कहानी
पेड़ की छाया	ढाक के तीन पात	नहाने का साबुन
मील का पत्थर	रेशमा के बच्चे	बनारस के आम

- **का**, **के** और **की** दो संज्ञाओं का संबंध बताते हैं। ऊपर दिए गए वाक्यांशों में अलग-अलग जगह इन तीनों का प्रयोग हुआ है। ध्यान से पढ़िए और कक्षा में बताइए कि **का**, **के** और **की** का प्रयोग कहाँ और क्यों हो रहा है?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर सामूहिक पात्राभिनय कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

14. नौकर

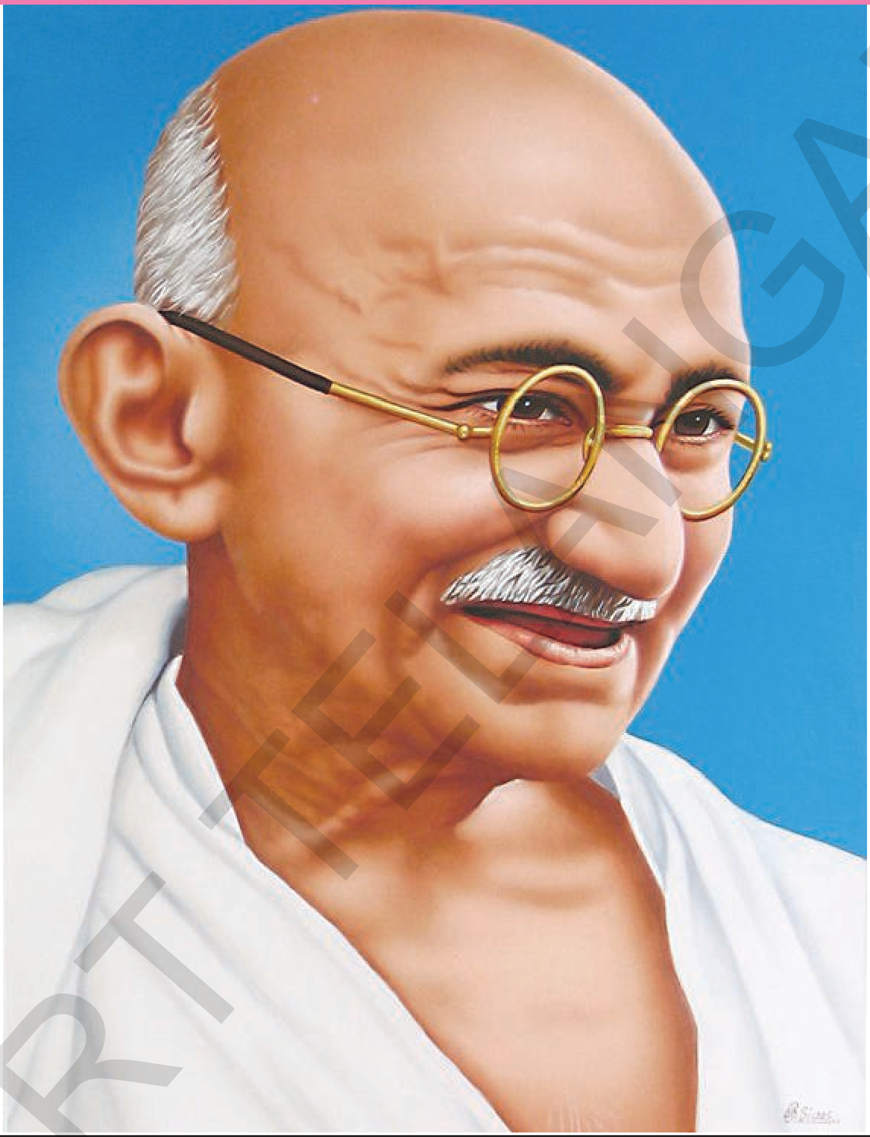

SCERT TELANGANA

प्रश्न :

1. यह चित्र किनका है?
2. महात्मा गाँधी के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. आप महात्मा गाँधी से मिलते तो क्या बातचीत करते? कल्पना कीजिए और बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

आश्रम में गांधी कई ऐसे काम भी करते थे जिन्हें आमतौर पर नौकर-चाकर करते हैं। जिस ज़माने में वे बैरिस्टरी से हज़ारों रुपये कमाते थे, उस समय भी वे प्रतिदिन सुबह अपने हाथ से चक्की पर आटा पीसा करते थे। चक्की चलाने में कस्तूरबा और उनके लड़के भी हाथ बँटाते थे। इस प्रकार घर में रोटी बनाने के लिए महीन या मोटा आटा वे खुद पीस लेते थे। साबरमती आश्रम में भी गांधी ने पिसाई का काम जारी रखा। वह चक्की को ठीक करने में कभी-कभी घंटों मेहनत करते थे। एक बार एक कार्यकर्ता ने कहा कि आश्रम में आटा कम पड़ गया है। आटा पिसवाने में हाथ बँटाने के लिए गांधी फ़ौरन उठकर खड़े हो गए। गेहूँ पीसने से पहले उसे बीनकर साफ़ करने पर वह ज़ोर देते थे। कौपीनधारी इस महान व्यक्ति को अनाज बीनते देखकर उनसे मिलने वाले लोग हैरत में पड़ जाते थे। बाहरी लोगों के सामने शारीरिक मेहनत का काम करते गांधी को शर्म नहीं लगती थी। एक बार उनके पास कॉलेज के कोई छात्र मिलने आए। उनको अंग्रेज़ी भाषा के अपने ज्ञान का बड़ा गर्व था। गांधी से बातचीत के अंत में वे बोले, "बापू, यदि मैं आपकी कोई सेवा कर सकूँ तो कृपया मुझे अवश्य बताएँ।" उन्हें आशा थी कि बापू उन्हें कुछ लिखने-पढ़ने का काम देंगे। गांधी ने उनके मन की बात ताड़ ली और बोले, "अगर आपके पास समय हो, तो इस थाली के गेहूँ बीन डालिए।" आगंतुक बड़ी मुश्किल में पड़ गए, लेकिन अब तो कोई चारा नहीं था। एक घंटे तक गेहूँ बीनने के बाद वह थक गए और गांधी से विदा माँग कर चल दिए।

SCERT TELANGANA

कुछ वर्षों तक गांधी ने आश्रम के भंडार का काम संभालने में मदद दी। सवेरे की प्रार्थना के बाद वे रसोईघर में जाकर सब्ज़ियाँ छीलते थे। रसोईघर या भंडारे में अगर वे कहीं गंदगी या मकड़ी का जाला देख पाते थे तो अपने साथियों को आड़े हाथों लेते। उन्हें सब्ज़ी, फल और अनाज के पौष्टिक गुणों का ज्ञान था। एक बार एक आश्रमवासी ने बिना धोए आलू काट दिए। गांधी ने उसे समझाया कि आलू और नींबू को बिना धोए नहीं काटना चाहिए। एक बार एक आश्रमवासी को कुछ ऐसे केले दिए गए जिनके छिलकों पर काले चक्ते पड़ गए थे। उसने बहुत बुरा माना। तब गांधी ने उसे समझाया कि ये जल्दी पच जाते हैं और तुम्हें खासतौर पर इसलिए दिए गए हैं कि तुम्हारा हाज़मा कमज़ोर है। गांधी आश्रमवासियों को अकसर स्वयं ही भोजन परोसते थे। इस कारण वे बेचारे बेस्वाद उबली हुई चीज़ों के विरुद्ध कुछ कह भी नहीं पाते थे। दक्षिण अफ़्रीका की एक जेल में वे सैकड़ों कैदियों को दिन में दो बार भोजन परोसने का कार्य कर भी चुके थे।

आश्रम का एक नियम यह था कि सब लोग अपने बरतन खुद साफ़ करें। रसोई के बरतन बारी-बारी से कुछ लोग दल बाँधकर धोते थे। एक दिन गांधी ने बड़े-बड़े पतीलों को खुद साफ़ करने का काम अपने ऊपर लिया। इन पतीलों की पेंदी में खूब कालिख लगी थी। राख भरे हाथों से वह एक पतीले को खूब ज़ोर-ज़ोर से रगड़ने में लगे हुए थे कि तभी कस्तूरबा वहाँ आ गईं। उन्होंने पतीले को पकड़ लिया और बोलीं, "यह काम आपका नहीं है। इसे करने को और बहुत से लोग हैं।" गांधी को लगा कि उनकी बात मान लेने में ही बुद्धिमानी है और वे चुपचाप कस्तूरबा को उन बरतनों की सफ़ाई सौंपकर चले आए। बरतन एकदम चमकते न हों, तब तक गांधी को संतोष नहीं होता था। एक बार जेल में उनको जो मददगार दिया गया था उसके काम से असंतुष्ट होकर उन्होंने बताया था कि वे खुद कैसे लोहे के बरतनों को भी माँज कर चाँदी-सा चमका सकते थे।

जब आश्रम का निर्माण हो रहा था उस समय वहाँ आने वाले कुछ मेहमानों को तंबुओं में सोना पड़ता था। एक नवागत को पता नहीं था कि अपना बिस्तर कहाँ रखना चाहिए, इसलिए उसने बिस्तर को लपेटकर रख दिया और यह पता लगाने गया कि उसे कहाँ रखना है। लौटते समय उसने देखा कि गांधी खुद उसका बिस्तर कंधे पर उठाए रखने चले जा रहे हैं।

आश्रम के लिए बाहर बने कुएँ से पानी खींचने का काम भी वे रोज़ करते थे। एक दिन गांधी कुछ अस्वस्थ थे और चक्की पर आटा पीसने के काम में हिस्सा बँटा चुके थे। उनके एक साथी ने उन्हें थकावट से बचाने के लिए अन्य आश्रमवासियों की सहायता से सभी बड़े-छोटे बरतनों में पानी भर डाला। गांधी को यह बात पसंद नहीं आई, मन में कुछ ठेस भी लगी। उन्होंने बच्चों के नहाने का एक टब उठा लिया और कुएँ से उसमें पानी भरकर टब को सिर पर उठाकर आश्रम में ले आए। बेचारे कार्यकर्ता को बहुत

पछतावा हुआ।

शरीर से जब तक बिलकुल लाचारी न हो तब तक गांधी को यह बात बिलकुल पसंद नहीं थी कि महात्मा या बूढ़े होने के कारण उनको अपने हिस्से का दैनिक शारीरिक श्रम न करना पड़े। उनमें हर प्रकार का काम करने की अद्‌भुत क्षमता और शक्ति थी। वह थकान का नाम भी नहीं जानते थे। दक्षिण अफ्रीका में बोअर-युद्ध के दौरान उन्होंने घायलों को स्ट्रेचर पर लादकर एक-एक दिन में पच्चीस-पच्चीस मील तक ढोया था। वह मीलों पैदल चल सकते थे। दक्षिण अफ्रीका में जब वे टॉलस्टॉय बाड़ी में रहते थे, तब पास के शहर में कोई काम होने पर दिन में अकसर बयालीस मील तक पैदल चलते थे। इसके लिए वे घर में बना कुछ नाश्ता साथ लेकर सुबह दो बजे ही निकल पड़ते थे, शहर में खरीददारी करते और शाम होते-होते वापस फार्म पर लौट आते थे। उनके अन्य साथी भी उनके इस उदाहरण का खुशी-खुशी अनुकरण करते थे।

एक बार किसी तालाब की भराई का काम चल रहा था, जिसमें गांधी के साथी लगे हुए थे। एक सुबह काम खत्म करके वे लोग फावड़े, कुदाल और टोकरियाँ लिए जब वापस लौटे तो देखते हैं कि गांधी ने उनके लिए तश्तरियों में नाश्ते के लिए फल आदि तैयार करके रखे हैं। एक साथी ने पूछा, "आपने हम लोगों के लिए यह सब कष्ट क्यों किया? क्या यह उचित है कि हम आपसे सेवा कराएँ?" गांधी ने मुसकराकर उत्तर दिया, "क्यों नहीं। मैं जानता था कि तुम लोग थके-माँदे लौटोगे। तुम्हारा नाश्ता तैयार करने के लिए मेरे पास खाली समय था।"

दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के जाने-माने नेता के रूप में गांधी भारतीय प्रवासियों की माँगों को ब्रिटिश सरकार के सामने रखने के लिए एक बार लंदन गए। वहाँ उन्हें भारतीय छात्रों ने एक शाकाहारी भोज में निमंत्रित किया। छात्रों ने इस अवसर के लिए स्वयं ही शाकाहारी भोजन तैयार करने का निश्चय किया था। तीसरे पहर दो बजे एक दुबला-पतला और छरहरा आदमी आकर उनमें शामिल हो गया और तश्तरियाँ धोने, सब्ज़ी साफ़ करने और अन्य छुट-पुट काम करने में उनकी मदद करने लगा। बाद में छात्रों का नेता वहाँ आया तो क्या देखता है कि वह दुबला-पतला आदमी और कोई नहीं, उस शाम को भोज में निमंत्रित उनके सम्मानित अतिथि गांधी थे।

गांधी दूसरों से काम लेने में बहुत सख्त थे, लेकिन अपने लिए दूसरों से काम कराना उन्हें नापसंद था। एक बार एक राजनीतिक सम्मेलन से गांधी जब अपने डेरे पर लौटे तो रात हो गई थी। सोने से पहले वे अपने कमरे का फर्श बुहार रहे थे। उस समय रात के दस बजे थे। एक कार्यकर्ता ने दौड़कर गांधी के हाथ से बुहारी ले ली।

जब गांधी गाँवों का दौरा कर रहे होते, उस समय रात को यदि लिखते समय लालटेन का तेल

SCERT TELANGANA

खत्म हो जाता तो वे चंद्रमा की रोशनी में ही पत्र पूरा कर लेना ज़्यादा पसंद करते थे, लेकिन सोते हुए अपने किसी थके हुए साथी को नहीं जगाते थे। नौआखाली पद-यात्रा के समय गांधी ने अपने शिविर में केवल दो आदमियों को ही रहने की अनुमति दी। इन दोनों को यह नहीं मालूम था कि खाखरा कैसे बनाया जाता है। इस पर गांधी स्वयं रसोई में जा बैठे और निपुण रसोइए की तरह उन्होंने खाखरा बनाने की विधि बताई। उस समय गांधी की अवस्था अठहत्तर वर्ष की थी।

गांधी को बच्चों से बहुत प्रेम था। अपने बच्चों के जन्म के दो माह बाद उन्होंने कभी किसी दाई को बच्चे की देखभाल के लिए नहीं रखा। वे मानते थे कि बच्चे के विकास के लिए माँ-बाप का प्यार और उनकी देखभाल अनिवार्य है।

वे माँ की तरह बच्चों की देखभाल कर सकते थे, खिला-पिला और बहला सकते थे। एक बार दक्षिण अफ्रीका में जेल से छूटने के बाद घर लौटने पर उन्होंने देखा कि उनके मित्र की पत्नी श्रीमती पोलक बहुत ही दुबली और कमज़ोर हो गई हैं। उनका बच्चा उनका दूध पीना छोड़ता नहीं था और वह उसका दूध छुड़ाने की कोशिश कर रही थीं। बच्चा उन्हें चैन नहीं लेने देता था और रो-रोकर उन्हें जगाए रखता था। गांधी जिस दिन लौटे, उसी रात से उन्होंने बच्चे की देखभाल का काम अपने हाथों में ले लिया। सारे दिन बडी मेहनत करने, सभाओं में भाषण देने के बाद, चार मील पैदल चलकर गांधी कभी-कभी रात को एक बजे घर पहुँचते थे और बच्चे को श्रीमती पोलक के बिस्तर पर से उठाकर अपने बिस्तर पर लिटा लेते थे। वह चारपाई के पास एक बरतन में पानी भरकर रख लेते ताकि यदि बच्चे को प्यास लगे तो उसे पिला दें, लेकिन इसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। बच्चा कभी नहीं रोता और उनकी चारपाई पर रात में आराम से सोता रहता था। एक पखवाड़े तक माँ से अलग सुलाने के बाद बच्चे ने माँ का दूध छोड़ दिया।

गांधी अपने से बड़ों का बड़ा आदर करते थे। दक्षिण अफ्रीका में गोखले गांधी के साथ ठहरे हुए थे। उस समय गांधी ने उनके दुपट्टे पर इस्त्री की। वह उनका बिस्तर ठीक करते थे, उनको भोजन परोसते थे और उनके पैर दबाने को भी तैयार रहते थे। गोखले बहुत मना करते थे, लेकिन गांधी नहीं मानते थे। महात्मा कहलाने से बहुत पहले एक बार दक्षिण अफ्रीका से भारत आने पर गांधी कांग्रेस के अधिवेशन में गए। वहाँ उन्होंने गंदे पाखाने साफ़ किए और बाद में उन्होंने एक बड़े कांग्रेसी नेता से पूछा, "मैं आपकी क्या

सेवा कर सकता हूँ?" नेता ने कहा, "मेरे पास बहुत से पत्र इकट्ठे हो गए हैं जिनका जवाब देना है। मेरे पास कोई कारकुन नहीं है जिसे यह काम दूँ। क्या तुम यह काम करने को तैयार हो?" गांधी ने कहा, "ज़रूर, मैं ऐसा कोई भी काम करने को तैयार हूँ जो मेरी सामर्थ्य से बाहर न हो।" यह काम उन्होंने थोड़े ही समय में समाप्त कर डाला और इसके बाद उन्होंने उन नेता की कमीज़ के बटन आदि लगाने और उनकी अन्य सेवा का काम खुशी से किया।

जब कभी आश्रम में किसी सहायक को रखने की आवश्यकता होती थी, तब गांधी किसी हरिजन को रखने का आग्रह करते थे। उनका कहना था, "नौकरों को हमें वेतनभोगी मज़दूर नहीं, अपने भाई के समान मानना चाहिए। इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है, कुछ चोरियाँ हो सकती हैं, फिर भी हमारी कोशिश सर्वथा निष्फल नहीं जाएगी।"

उन्हें यह मालूम ही न था कि किसी को नौकर की भाँति कैसे रखें। एक बार भारत की जेल में उनके कई साथी कैदियों को उनकी सेवा-टहल का काम सौंपा गया। एक आदमी उनके फल धोता या काटता, दूसरा बकरियों को दुहता, तीसरा उनके निजी नौकर की तरह काम करता और चौथा उनके पाखाने की सफ़ाई करता था। एक ब्राह्मण कैदी उनके बरतन धोता था और दो गोरे यूरोपियन प्रतिदिन उनकी चारपाई बाहर निकालते थे।

गांधी ने देखा कि इंग्लैंड में ऊँचे घरानों में घरेलू नौकरों को परिवार का आदमी माना जाता था। एक बार एक अंग्रेज़ के घर से विदा लेते समय उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि घरेलू नौकरों का उनसे परिचय नौकरों की तरह नहीं बल्कि परिवार के सदस्य के समान कराया गया।

एक बार एक भारतीय सज्जन के यहाँ काफ़ी दिनों तक ठहरने के बाद गांधी जब चलने लगे तब उस घर के नौकरों से उन्होंने विदा ली और कहा, "मैं कभी किसी को अपना नौकर नहीं समझता, उसे भाई या बहन ही माना है और आप लोगों को भी मैं अपना भाई समझता हूँ। आपने मेरी जो सेवा की उसका प्रतिदान देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है, लेकिन ईश्वर आपको इसका पूरा फल देंगे।"

❑ *अनु बंद्योपाध्याय*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. आप घर के कौन–कौन से काम करते हैं?
2. लोग घर में नौकर क्यों रखते हैं?
3. जिन के घर में नौकर नहीं होते, उनके घर का काम कौन करते हैं? कैसे?

पढ़िए

1. आश्रम में कॉलेज के छात्रों से गाँधी जी ने कौन–सा काम करवाया? क्यों?
2. लंदन में भोज पर बुलाए जाने पर गाँधी जी ने क्या किया?
3. आश्रम में काम करने या करवाने का कौन–सा तरीका गाँधी जी अपनाते थे? इसे पढ़कर लिखिए।

लिखिए

1. आश्रम में गाँधी जी कई ऐसे काम भी करते थे, जिन्हें आम तौर पर नौकर–चाकर करते हैं। पाठ से तीन ऐसे प्रसंगों को अपने शब्दों में लिखो जो इस बात का प्रमाण हों।
2. गाँधी जी इतना पैदल क्यों चलते थे? पैदल चलने से क्या लाभ है? लिखिए।
3. अपने घर के किन्हीं दस कामों की सूची बनाकर लिखिए और यह भी उन कामों को घर के कौन–कौन से सदस्य अक्सर करते हैं? तुम तालिका की सहायता से कर सकते हो–

क्र.सं.	काम	मैं	माँ	पिता	भाई	बहन	चाचा	दादी	अन्य
1.	घर का सामान लाना								
2.	घर की सफ़ाई करना								
3.	खाना बनाना								
4.	कपड़े धोना								

अब यह देखिए कि कौन सबसे ज्यादा काम करता है और कौन सबसे कब कम। कामों का बराबर बँटवारा हो सके, इसके लिए आप क्या कर सकते हैं, सोचकर लिखिए।

शब्द भंडार

1. **युग्म शब्द**–जुड़ कर आने वाले शब्दों को युग्म शब्द कहते हैं।
   जैसे–नौकर–चाकर, पढ़ना–लिखना,
   ...., ..., ..., ...

SCERT TELANGANA

2. इस पाठ में गाँधी जी द्वारा प्रयोग किये गये उर्दू भाषा के कुछ शब्दों को छाँटिए और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए।
जैसे–कारकुन = सदस्य
स्वेच्छिक संस्था का कारकुन चंदा माँगने आया।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ नौकर पाठ में गांधी जी अपना काम स्वयं करते हुए दिखायी देते हैं। **आप** कौन–कौन से काम अपने आप करते हो? मित्र से वार्तालाप कीजिए।

प्रशंसा

■ गांधी जी के जीवन से हम किन मूल्यों का अनुसरण कर सकते हैं? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. 'पिसाई' संज्ञा है। पीसना शब्द से 'ना' निकाल देने पर 'पीस' धातु रह जाती है। पीस धातु में 'आई' प्रत्यय जोड़ने पर 'पिसाई' शब्द बनता है। किसी–किसी क्रिया में प्रत्यय जोड़कर उसे संज्ञा बनाने के बाद उसके रूप में बदलाव आ जाता है, जैसे ढोना से ढुलाई, बोना से बुआई।
मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं।
कुछ संज्ञाएँ दी गई हैं। बताइए ये किन क्रियाओं से बनी हैं?

रोपाई	कटाई ....
सिंचाई	सिलाई ....
कताई	रँगाई ....

2. नीचे लिखे गए शब्द पाठ से लिये गये हैं। इन्हें पाठ में खोजकर **बताइए** कि ये स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग

कालिख	भराई	चक्की
रोशनी	सेवा	पतीला

SCERT TELANGANA

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस पाठ से अपने आप स्वयं करने के बारे में निबंध लिख सकता/सकती हूँ।		

आबिद की चुटकी

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

साँस-साँस में बाँस (उपवाचक)

एक जादूगर थे चंगकीचंगलनबा। अपने जीवन में उन्होंने कई बड़े-बड़े करतब दिखलाए। जब मरने को हुए तो लोगों से बोले, "मुझे दफ़नाए जाने के छठे दिन मेरी कब्र खोदकर देखोगे तो कुछ नया-सा पाओगे।"

कहा जाता है कि मौत के छठे दिन उनकी कब्र खोदी गई और उसमें से निकले बाँस की टोकरियों के कई सारे डिज़ाइन। लोगों ने उन्हें देखा, पहले उनकी नकल की और फिर नए डिज़ाइन भी बनाए।

बाँस भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुतायत में होता है। भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुत उगता है। इसलिए वहाँ बाँस की चीज़ें बनाने का चलन भी खूब है। सभी समुदायों के भरण-पोषण में इसका बहुत हाथ है। यहाँ हम खासतौर पर देश के उत्तरी-पूर्वी राज्य नागालैंड की बात करेंगे। नागालैंड के निवासियों में बाँस की चीज़ें बनाने का खूब प्रचलन है।

इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। आवश्यकता के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं।

कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था। शायद भोजन इकट्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!

बाँस से केवल टोकरियाँ ही नहीं बनतीं। बाँस की खपच्चियों से ढेर चीज़ें बनाई जाती हैं, जैसे-तरह-तरह की चटाइयाँ, टोपियाँ, टोकरियाँ, बरतन, बैलगाड़ियाँ, फ़र्नीचर, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल और खिलौने भी।

असम में ऐसे ही एक जाल, जकाई से मछली पकड़ते हैं। छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है। बाँस की खपच्चियों को इस तरह बाँधा जाता है कि वे एक शंकु का आकार ले लें। इस शंकु का ऊपरी सिरा अंडाकार होता है। निचले नुकीले सिरे पर खपच्चियाँ एक-दूसरे में गुँथी हुई होती हैं।

खपच्चियों से तरह-तरह की टोपियाँ भी बनाई जाती हैं। असम के चाय बागानों के चित्रों में तुम्हें लोग ऐसी टोपियाँ पहने दिख जाएँगे और हाँ उनकी पीठ पर टँगी बाँस की बड़ी-सी टोकरी देखना न भूलना।

जुलाई से अक्टूबर, घनघोर बारिश के महीने! यानी लोगों के पास बहुत सारा खाली वक्त या कहो आसपास के जंगलों से बाँस इकट्ठा करने का सही वक्त। आमतौर पर वे एक से तीन साल की उम्र वाले बाँस काटते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी तो जाते हैं। बाँस से शाखाएँ और पत्तियाँ अलग कर दी जाती हैं। इसके बाद ऐसे बाँसों को चुना जाता है जिनमें गाँठें दूर-दूर होती हैं। दाओ यानी चौड़े, चाँद जैसी फाल वाले चाकू से इन्हें छीलकर खपच्चियाँ तैयार की जाती हैं। खपच्चियों

SCERT TELANGANA

की लंबाई पहले से ही तय कर ली जाती है। मसलन, आसन जैसी छोटी चीज़ें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है। लेकिन टोकरी बनाने के लिए हो सकता है कि दो या तीन या चार गठानों वाली लंबी खपच्चियाँ काटी जाएँ। यानी कहाँ से काटा जाएगा यह टोकरी की लंबाई पर निर्भर करता है।

आमतौर पर खपच्चियों की चौड़ाई एक इंच से ज़्यादा नहीं होती है। चौड़ी खपच्चियाँ किसी काम की नहीं होतीं। इन्हें चीरकर पतली खपच्चियाँ बनाई जाती हैं। पतली खपच्चियाँ लचीली होती हैं। खपच्चियाँ चीरना उस्तादी का काम है। हाथों की कलाकारी के बिना खपच्चियों की मोटाई बराबर बनाए रखना आसान नहीं। इस हुनर को पाने में काफ़ी समय लगता है।

टोकरी बनाने से पहले खपच्चियों को चिकना बनाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ फिर दाओ काम आता है। खपच्ची बाएँ हाथ में होती है और दाओ दाएँ हाथ में। दाओ का धारदार सिरा खपच्ची को दबाए रहता है जबकि तर्जनी दाओ के एकदम नीचे होती है। इस स्थिति में बाएँ हाथ से खपच्ची को बाहर की ओर खींचा जाता है। इस दौरान दायाँ अँगूठा दाओ को अंदर की ओर दबाता है और दाओ खपच्ची पर दबाव बनाते हुए घिसाई करता है। जब तक खपच्ची एकदम चिकनी नहीं हो जाती, यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। इसके बाद होती है खपच्चियों की रंगाई। इसके लिए ज़्यादातर गुड़हल, इमली की पत्तियों आदि का उपयोग किया जाता है। काले रंग के लिए उन्हें आम की छाल में लपेटकर कुछ दिनों के लिए मिट्टी में दबाकर रखा जाता है।

बाँस की बुनाई वैसे ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को चित्र में दिखाए गए तरीके से आड़ा-तिरछा रखा जाता है। फिर बाने को बारी-बारी से ताने के ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चैक का डिज़ाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह।

टुइल बुनना हो तो हरेक बाना दो या तीन तानों के ऊपर और नीचे से जाता है। इससे कई सारे डिज़ाइन बनाए जा सकते हैं।

टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूँथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है और हमारी टोकरी तैयार! चाहो तो बेचो या घर पर ही काम में ले लो।

❑ *एलेक्स एम. जॉर्ज*
(अनुवाद–शशि सबलोक)

प्रश्न

1. बाँस को बूढ़ा कब कहा जा सकता है? बूढ़े बाँस में कौन सी विशेषता होती है जो युवा बाँस में नहीं पाई जाती?
2. बाँस से बनाई जाने वाली चीज़ों में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ आपको कौन सी लगी और क्यों?
3. बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?
4. बाँस के विभिन्न उपयोगों से संबंधित जानकारी देश के किस भू-भाग के संदर्भ में दी गई है? एटलस में देखो।

SCERT TELANGANA

शब्दकोश

यहाँ तुम्हारे लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और तुम्हारे लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर तुम यह अनुमान खुद लगाओ कि कौन सा अर्थ ठीक है।

आप देखेंगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से आप इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हो–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुल्लिंग	मु.	–	मुहावरा
वि.	–	विशेषण	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग
सं.	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया

अंट-शंट [वि.पु.]-फ़ालतू या बेकार (की चीज़)
अंचल [पु.]-साड़ी, ओढ़नी आदि जैसे कपड़ों का किनारे का हिस्सा, आँचल
अडिग [वि.]-स्थिर, न डोलने वाला
अनादिकाल [वि.]-जो सदा से चला आ रहा हो
अनुकरण [सं.पु.]-नकल, किसी की देखा-देखी करना
अबूझ [वि.]-जिसे बूझा या समझा न जा सके, अनबूझ
अभिराम [वि.]-सुंदर, मोहक
अवलोकन [सं.पु.]-बारीकी से देखना, जाँचना-परखना
आगंतुक [वि.]-आनेवाला
ऑलिव ऑयल [सं.]-जैतून का तेल
आस्तीन [स्त्री.]-कुर्ते, कमीज़ जैसे सिले हुए कपड़े की बाँह
आह्लादकर [पु.]-खुशी देनेवाला
आह्वान [पु.]-बुलावा, आमंत्रण, पुकार
उकेरना [स.क्रि.]-खोदकर उठाना
उद्दाम [वि.]-बंधन रहित, बहुत ज़्यादा
उष्णता [सं.]-गरमी
ओजस्वी [वि.]-ओजभरा, प्रभावपूर्ण, शक्तिशाली
कंटक [पु.]-काँटा
कतरा [पु.]-बूँद
कनी [स्त्री.]-बूँदें, कण
कमतर [वि.]-कम महत्त्वपूर्ण, कम करके आँकना
करताल [पु.]-एक प्रकार का वाद्य-यंत्र
कल [स्त्री.]-चैन
काढ़ना [स.क्रि.]-निकालना
काम आना [मु.]-युद्ध में मारा जाना, शहीद होना
कारकुन [वि.]-कारिंदा, काम करने वाला
कालगति [स्त्री.]-मृत्यु
कार्निस [सं.] दीवार की कँगनी
कित [अ.]-कहाँ
कृत्रिम [वि.]-बनावटी
केतिक [वि.]-कितना
कैस्टर ऑयल [सं.]-अरंडी का तेल
कोरस [वि.[-एक साथ मिलकर गाना
कौपीनधारी [पु.]-धोती पहनने के एक विशेष ढंग के कारण यह विशेषण गांधी जी के लिए प्रयोग में लाया जाता था, लँगोटी धारण करनेवाला
खपच्ची [स्त्री.]- बाँस की तीली
खलना [अ.क्रि.]-अखरना
खाक [स्त्री.]-धूल, मिट्टी, राख
खाखरा [पु.]-एक गुजराती व्यंजन
खाट [पु.]-चारपाई
खिचड़ी [स्त्री.]-मिला-जुला
खीझना [अ.क्रि.]-झुँझलाना, क्रुद्ध होना
गरबीली [वि.]-गर्व करने वाली
गरारा [पु.अ.]-ढीली मोहरी का पाजामा
गलतफ़हमी [स्त्री.]-गलत समझना
गलीचा [पु.]-सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन
गात [पु.]-शरीर
गाथा [स्त्री.]-कहानी
गिर्द [अ.]-आसपास
गुलज़ार [वि.]-खिले हुए फूलों से भरा हुआ, फुलवारी
गोकि [वि.]-हालाँकि, यद्यपि
गोट [स्त्री.]-सुंदरता के लिए कपड़े पर लगाई जाने वाली पट्टी, फुलकारी, मगज़ी
घरीक [अ.]-घड़ीभर, क्षणभर
घात [वि.]-छल, चाल
चंद [वि.]-कुछ
चटक [पु.]-रंग की शोखी / भड़कीला / चटकीला
च्वै-आँसू बह चले
चबेना [पु.]-चबाकर खाने वाली खाद्य सामग्री
चाँदनी [स्त्री.]-चंदोवा, ऊपर से ताना गया कपड़ा
चारु [वि.]-सुंदर

चिथड़े [पु.]–फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़
चुनिंदा [वि.]–चुना हुआ
चुन्नट [स्त्री.]–सिलवट
छबीली [वि.]–सुंदर
छरहरा [वि.]–चुस्त, फुर्तीला
जमघट [पु.]–एक जगह इकट्ठे लोगों की भीड़, जमाव
ज़र्रा [पु.अ.]–कण
जानि [स्त्री.सं.]–जानकर
जुंडी [स्त्री.सं.]–जौ और बाजरे की बालियाँ
झलकीं [स्त्री.]–दिखाई दीं
झाँझ [स्त्री.]–काँसे की दो तश्तरियों से बना हुआ वाद्य-यंत्र
टरकाना [स.क्रि.]–खिसका देना, टाल देना
टीपना [स.क्रि.]–हू-ब-हू उतारना, नकल करके लिखना
ठाढ़े [वि.]–खड़े
डग [पु.]–कदम
तश्तरी [स्त्री.]–थालीनुमा प्लेट
तिय [स्त्री.]–पत्नी
तिहाकर [स.क्रि.]–तह लगाकर
दए [क्रि.]–रखना, धरना
दरख्वास्त [सं.स्त्री]–निवेदन, अर्ज़ी
दरिया [सं.पु.]–नदी
दामन [सं.पु.]–पहाड़ के नीचे की ज़मीन
दिव्य [वि.]–बढ़िया, भव्य
द्योतक [वि.]–सूचक
द्वंद्व [सं.पु.]–संघर्ष
द्वै [वि.]–दो
धरि-**रखकर**
धीर-**खवि.,-धैर्य, धीरज**
नाह [पु.]– पति, स्वामी
निकसी [स्त्री.क्रि.]–निकली
निपात [वि.]–गिरना, पतन
नियामत [स्त्री.]–ईश्वर की देन
निष्फल [वि.]–जिसका कोई फल न हो।
निस्पृह [वि.]–इच्छा रहित
पंखा [पु.]–हाथ से झलनेवाला पंखा, बेना
पखारैं [स.क्रि.]–धोना
पगडंडी [स्त्री.]–खेत या मैदान में पैदल चलनेवालों के लिए बना पतला रास्ता
पर्नकुटी [स्त्री.]–पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया
परिखौ [स.क्रि.]–प्रतीक्षा करना, परखना
पसेउ [पु.]–पसीना
पुट [पु.]–होंठ
पुर [वि.]–नगर, किला
पेचीदा [वि.]–उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा
प्रकोप [पु.]–बीमारी का बढ़ना, बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप
प्रतिदान [पु.]–किसी ली हुई वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना
प्रागैतिहासिक मानव [वि.]–इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव
पोंछि-पोंछकर
फ़िरंगी [पु.]–विदेशी, अंग्रेज़ (भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त)
फ़िरोज़ी [स्त्री]–फ़ीरोज़े के रंग का
फ़ौलादी [वि.]–फ़ौलाद (लोहे) से बना बहुत कड़ा या मज़बूत
फ्रिल [सं.]–झालर**बुरकना** [स.क्रि.]–चूरे जैसी किसी चीज़ को छिड़कना
बुहारी [स.क्रि.]–बुहारनेवाली चीज़, झाड़ू
बूझति [स्त्री. सं.क्रि.]–पूछती है
बेज़ार [वि.]–परेशान
बैरिस्टरी [स्त्री.]–वकालत
बघारना [स.क्रि.]–पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना
बदहज़मी [स्त्री.]–अपच, अजीर्ण
बिलोचन [पु.]–नेत्र
बुंदेले हरबोलों [पु.]–बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थी
भूभुरि [स्त्री.]–गरम रेत, गरम धूल
भृकुटी [स्त्री.]–भौंहें
भेड़ लेना [स.क्रि.]–भिड़ा देना, सटा देना, बंद करना
मंशा [पु.]– इरादा
मग [सं.पु.]–रास्ता
मनुज [पु.]–मनुष्य
मरज (मर्ज़) [पु.]–बीमारी
मुदित [वि.]–मोदयुक्त, आनंदित
मुमकिन [वि.अ.]–संभव
यान [पु.]–वाहन
लरिका [पु.]–लड़का
लैम्प [पु.]–चिराग
लोच [स्त्री.]–लचीलापन, लचक
वात [पु.]–शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने से होनेवाला रोग
वारि [पु.]–जल
विकट [वि.]–भयंकर, दुर्गम, कठिन
विजन [वि.]–निर्जन या एकांत जगह
विरुदावली [वि.]–विस्तृत कीर्ति-गाथा, बड़ाई
व्यूह रचना [स्त्री.]–समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा-पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना
शख्सियत [स्त्री.]–व्यक्तित्व
शिफ़्ट [स.क्रि.]–पारी
शिविर [पु.]–रहने या आराम करने के लिए तंबू गाड़कर अस्थायी रूप से बनाई गई जगह
समाँ [पु.]–वातावरण, माहौल, समय
सहल [वि.]–आसान
सॉक्स [सं.]–मोज़ा, जुराब
साँकल [स्त्री.]–दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की कड़ी
सिम्त [स्त्री.]–दिशा
सिरजती [स्त्री.]–बनाती, सृजन करती
सिलसिला [वि.]–क्रम
सीरत [स्त्री.]–गुण
सीस [पु.]–शीश, सिर
सुभट [पु.]–रणकुशल, योद्धा
स्टॉक [सं.]–संग्रह, भंडार
स्टॉकिंग [स्त्री.]–लंबी जुराब
हाज़मा [वि.]–पाचन-शक्ति
हिकमत [वि.स्त्री.]–युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त [वि.स्त्री.]–रक्षा
हेकड़ी [वि.स्त्री.]–घमंड
हेय [वि.]–हीन, तुच्छ

SCERT TELANGANA